सफरकी कुंजी ।



लेखक—

गगाप्रसाद अग्रवाल ।

हरि ओ३म्

सफरकी कुंजी



लेखक—

गंगाप्रसाद अग्रवाल

आवृत्ति ११०० | सन् १९२९ | मूल्य ||=) मात्र

प्रकाशक
गोपालप्रसाद गोविन्दप्रसाद अग्रवाल
दौंड, जिला पूना



मुद्रक—
रामानन्दतिवारी,
"जगदीश प्रेस"
११२, काटन स्ट्रीट
कलकत्ता

आत्म-निवेदन

सबसे पहिले मैं उस परमपिता जगदीश्वरको अनेक धन्यवाद देता हूं, जिसकी असीम कृपासे यह पुस्तक लिखनेका सुअवसर प्राप्त हुआ है। प्राणी मात्रके लिये कभी-कभी यात्रा करते रहना भी आवश्यक है। यात्रा करनेसे मनुष्यके हृदयमें परिवर्तन होता रहता है, चित्त प्रसन्न होता है। इसके अतिरिक्त यात्रामें अनेक प्रकारके प्राकृतिक स्थल, सुन्दर-सुन्दर नगर और भांति-भांतिके मनुष्योंके देखनेका सुअवसर प्राप्त होता है, जिससे मनुष्यका ज्ञान बढ़ता है, चतुराई आती है और अनेक प्रकारके अनुभव प्राप्त होते हैं। जो लोग घर छोड़कर बाहर यात्रा करने कभी नहीं जाते उनको लोग "कूपमण्डूक" के समान समझते हैं। उनकी बुद्धि संकुचित रहती है, यात्रामें नाना प्रकारके अनुभव प्राप्त करनेसे मनुष्यका हृदय विशाल हो जाता है, क्योंकि प्रदेशमें अनेक प्रकारके नये-नये स्त्री-पुरुषोंसे परिचय होता है, मनुष्यजातिसे आत्मीयता उत्पन्न होती है और दूसरोंके सुख दुःखसे अपने सुख दुःखका मिलान करनेसे परस्पर सहानुभूतिकी वृद्धि होती है।

यात्रा कई निमित्तोंसे की जाती है। कोई तीर्थ करनेके लिये, कोई नगर और प्राकृतिक स्थलोंके दर्शन करनेके लिये और कोई व्यापार व्यवसायके लिये यात्रा करते हैं। खैर, किसी भी निमित्तसे यात्रा

क्यों न की जाय पर वर्षमें कम-से-कम एक बार प्रत्येक गृहस्थको यात्रा करनेके लिये समय अवश्य निकालना चाहिये। गृहस्थको वर्षभरके खर्चमेंसे यात्रा करनेके लिये भी कुछ द्रव्य अवश्य निकाल रखना चाहिये। यह ख्याल न करे कि यात्रा करनेमें जो पैसा खर्च किया जायगा वह व्यर्थ जायेगा। नहीं, चाहे जिस श्रेणीका मनुष्य हो उसको देशाटनसे कुछ-न-कुछ लाभ अवश्य होगा। यदि धनका कोई प्रत्यक्ष लाभ न होगा तो उसका चित्तही प्रसन्न हो जायगा, उसको आरोग्यतामें ही कुछ वृद्धि हो जायगी अथवा अनेक प्रकारका ज्ञान और अनुभव तो अवश्य ही बढ़ेगा। ये सब बातें ऐसी हैं कि जो मनुष्यकी हर प्रकारकी उन्नतिके लिये बहुत आवश्यक हैं। इसलिये देशाटनमें जो धन खर्च हो उसको व्यर्थ कभी न समझना चाहिये।

तीर्थयात्रा करनेकी परिपाटी हमारे यहाँ बहुत प्राचीन कालसे है। जगन्नाथ, रामेश्वर, द्वारका, बद्रीनाथ ये चारों धाम भारतवर्षकी चारों सीमाओंपर अवस्थित हैं। जो मनुष्य ये चार धाम कर लेता है, वह मानों सम्पूर्ण भारतवर्षकी यात्रा कर लेता है। इन्हीं चारों धामोंके अन्तर्गत हमारे अन्य सब तीर्थ भी आ जाते हैं। प्राचीन कालमें लोग परलोककी कामना करके वृद्धावस्थामें पैदलयात्रा किया करते थे और अब भी प्राय ऐसा ही करते हैं, किन्तु आधुनिक समयमें हमारे देशके लोगोंकी आयु कम हो गई है, शरीरकी क्षीणता भी अधिक बढ़ गई है, इसलिये ऐसी दशामें शक्ति रहते (जवानीमें) यदि यात्रा कर लिया करें तो अच्छा है।

यात्रा करनेके साधनोंमें आजकल रेलगाड़ीका उपयोग विशेष

किया जाता है, पर इससे देशाटनका पूरा-पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता, क्योंकि जिस स्थानमें हम उतरना चाहते हैं, उसी स्थानको देख सकते हैं और बीचमे आनेवाले स्थान देखनेसे वंचित रह जाते हैं। इसके सिवाय खाने, पीने, सोने, स्नानादिमें अनियमितपन आ जाता है। इससे स्वास्थ्य कभी-कभी बिगड़ जाता है। पैदल यात्रा करनेकी परिपाटी अधिक अच्छी थी, इससे देशभ्रमणका अनुभव बहुत अच्छा होता था, पर अब रेलका स्वल्प समय-साध्य साधन छोडकर पैदलयात्रा करनेका साहस किसीको नहीं होता। जो धन हम घरसे बांधकर चलते हैं, उसमेंसे अधिकांश रेलगाडी, इक्का, तांगा, घोडागाडी और कुली इत्यादि ले जाते हैं। जो धनवान पुरुष हैं, वह तो काफी धन खर्च करके प्रवासका आनन्द उठा लेते हैं, परन्तु गरीब लोगोंको प्रवासके सुखकी अपेक्षा दुःख ही विशेष उठाना पडता है। इनको रेलके तीसरे दरजेमें सफर करनी पडती है और बडी-बडी यात्राओंमे तो यह लोग कभी-कभी जानवरोंकी तरह बेशुमार मालगाडीके डिब्बों तकमें भर दिये जाते हैं जिनको मार्गमें हवा, पानी, पाखाना, पेशाबतकका भयंकर कष्ट भोगना पडता है और नियमोंकी अनभिज्ञताके कारण रेल आदिके कर्मचारियों द्वारा इतना कष्ट होता है कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं।

बडी-बडी यात्राओंमें यदि स्त्रियां और बच्चे साथमें रहते हैं तो दुर्गति और भी अधिक बढ जाती है। हरिद्वार और प्रयागके समान कुम्भके मेलेमें सैकड़ों स्त्रियां और बच्चे इधर-उधर छूट जाते हैं, जिनको विधर्मी लोग धोखा देकर बहका ले जाते हैं। उस समय-

की उनकी यातनाको सिवाय ईश्वरके और कौन जान सकता है ? इसलिये बडी-बड ी यात्राओमें स्त्री और बच्चोंको कभी साथ न ले जाना चाहिये ।

तो क्या स्त्रियों और बच्चोंको यात्राके आनन्दसे वंचित ही रखना चाहिये ? नहीं इन लोगोंको भी समय-समयपर नगर, पहाड, सोते, नदी, तीर्थस्थान इत्यादिके दर्शन अवश्य कराने चाहिये , क्योंकि स्त्रिया और बच्चे गृहस्थीके मुख्य अंग है, इनका चित्त प्रसन्न रहनेसे सम्पूर्ण कुल प्रसन्न रहता है । हा, इस बातका ध्यान अवश्य रखना चाहिये कि जहा मेले-तमाशेमें अधिक भीड हो, वहा इनको न ले जाय। जब कोई भारी मेला न हो, तब शातिके समय इनको आनन्द-पूर्वक दर्शन कराना चाहिये ।

यात्रा करते समय शरीरकी आरोग्यता और अपने नित्य नियमों-का ध्यान रखना परम आवश्यक है अन्यथा यात्रासे लाभके बदले हानि ही विशेष होनेकी सभावना रहती है ।

कुछ वर्षों पहिले जबकि भारतवर्षमें रेलगाड़ीका विकास नहीं हुआ था, उस समय मनुष्य पैदल, बैलगाडी, घोडा, इक्का आदि सवारियों-द्वारा आने-जानेका काम निकालकर यात्रा किया करते थे, परन्तु जबसे । रेलगाडीका विकास हुआ है, तबसे मनुष्योंकी संख्या यात्रियोंमें अधिक गिनी जाती है, जिनका जीवन सुखमय व्यतीत न होकर दु ख-मय ही व्यतीत होता है, क्योंकि अधिकाश जनसमुदाय यात्राके नियमोंसे अनभिज्ञ हैं । इसलिये वह रोगपीड़ित देखनेमें आता है, चोर, ठगोंसे ठगा जाता है । तात्पर्य यह है कि यात्रा करनेवाले

मनुष्यको परदेशमें बड़ी मुसीबतोंका सामना करना पड़ता है। आज कल विरला ही पुरुष ऐसा होगा जिसे थोड़ा-बहुत यात्रा करनेका अवसर न मिलता रहता हो। इसलिये मैं ने "सफरकी कुञ्जी" नामक यह पुस्तक सर्वसाधारणके लाभार्थ लिखनेका साहस किया है।

इस पुस्तकमें यात्रासे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक विषय विस्तार-पूर्वक लिखे गये हैं, जैसे यात्राकी व्याख्या, यात्रीका परदेशमें कर्तव्य, रेलमें सफर करनेके नियम, ठहरनेका स्थान कैसा होना चाहिए? चोर, डाकू, ठग, प्रपञ्ची, धोखेबाजोंसे बचनेका उपाय, स्वास्थ्यवर्धक नियम और चुटकल, अपरिचित मनुष्योंके साथ व्यवहार, रेलवेके नियम, अपनी बीती घटनायें आदि अन्य बहुत-सी बातोंका अपनी तुच्छ बुद्धि अनुसार तथा स्वय अनुभवद्वारा भली प्रकार दिग्दर्शन कराया गया है।

मैं अपनेको कोई लेखक या विद्वान न कहकर केवल यात्री ही कहूंगा, क्योंकि मुझे अपने जीवनमें यात्रा करनेका विशेष अवसर प्राप्त होता रहा है यानी मुझको कलकत्तेसे मद्रास, बम्बईसे कराची, देहली, जगनाथपुरी आदिक बड़े-बड़े दूरस्थ स्थानोंको यात्रा द्वारा देखनेका मौका मिला है। इसलिये मुझे यात्राके दरम्यान जो कुछ यात्राके दुःख-सुखका अनुभव प्राप्त हुआ है और मैंने जो यात्रा करने की शैली निर्धारित की है उसीका सार पाठकोंके समक्ष इस पुस्तक द्वारा भेट किया जाता है जिससे जनसाधारण लाभ उठा सकें।

यद्यपि यात्रासे सम्बन्ध रखनेवाली अन्य पुस्तकें भी हिन्दी-संसारमें प्रकाशित हुई हैं जिनमें कि लेखकोंने अपनी यात्राओंका

विषय	पृष्ठ

(१) तीर्थ यात्रा—का अर्थ है कि किसी भी धर्मका मानने वाला मनुष्य अपने धर्मानुकूल पूज्य देवस्थानोंपर पहुचनेके लिये घरसे बाहर निकले, जैसे सनातनी हिन्दू अपने प्राचीन देवस्थान बद्रीनाथ, जगन्नाथ, गया, काशी, मथुरा, द्वारका, रामेश्वर, अयोध्या आदि तीर्थस्थानोंमें जाकर वहांकी दिव्य मूर्तियोंके दर्शनकर अपने जन्मको सफल मानते हैं, और जन्म जन्मान्तरके पापोंसे मुक्त होकर स्वर्गधाममें वास करनेके अधिकारी बनते हैं। जैनी अपने देवता महावीर स्वामी, बौद्ध आदिके तीर्थस्थानोंको देखनेके लिये यात्रा करते हैं। मुसलमान काबा, मक्का, मदीना आदि तीर्थ-स्थानोंमें जाकर उनकी पूजा करनेके लिये तीर्थयात्रा करते हैं। दक्षिणी मराठी लोग शिवजी, गणपति, विठोबा आदिके पूज्य स्थानोंकी मानता करनेके कारण तीर्थयात्रा करते हैं। बंगाली लोग अपने भगवान गोविंददेवकी विशेष भक्ति करनेके कारण उनके दर्शनार्थ वृन्दावनधामकी तीर्थयात्रा करते हैं। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक पुरुष जो जिस धर्म व देवताका माननेवाला होता है, वह उसीकी पूजा करनेके लिये अपने घरसे निकलकर तीर्थयात्रा करनेके लिये जगह-जगह घूमता है। इसीका नाम तीर्थयात्रा है।

(२) व्यापारिक यात्रा—जो व्यापारके निमित्त प्रदेश जाया जाय, उसे ही व्यापारिक यात्रा कहते हैं, जैसे एक मंडीका व्यापारी अपने मुनीम या गुमाश्तेको दूसरी मंडीकी आढ़तमें माल-की खरीद या फरोख्त करनेके लिये भेजता है तथा बहुतसे मुनीम गुमाश्ते [illegible]

रुपया उगाहनेके लिये घूमा करते हैं अथवा बड़ी-बड़ी कम्पनियोंके एजेन्ट सैम्पुल्वक्स लेकर अपनी कम्पनीका माल बेचनेकी गरजसे जगह-जगहके दूकानदारोंसे आर्डर लेते फिरते हैं। छोटे-छोटे कसबों-के व्यापारी अपने नजदीकवाली मंडीमें माल खरीदने व बेचनेके लिये जाते-आते रहते हैं। बहुतसे लोग नौकरीकी इच्छासे इधर उधर घूमते रहते हैं। बहुतसे नौकरीपर तैनात मनुष्य बदली हो जाने या छुट्टीपर अपने-अपने निश्चित स्थानपर जाते-आते रहते हैं—इत्यादि। यानी जो यात्रा केवल व्यापार-निमित्त कहीं भी की जाय उसे ही व्यापारिक यात्रा कहेंगे।

(३) पर्य्यटन—का दूसरा अर्थ है दौरा करना। जो मनुष्य मुल्क-मुल्कमें, प्रान्त-प्रान्तमें विलायतमें अथवा दुनियाभरमें घूमे, उस यात्राको पर्य्यटन कहते हैं। चाहे वह सैर करनेके लिये या देशका कार्य करनेके लिये या शेर, सूअरों आदिका शिकार करनेके लिये या गर्मी-में शिमला, मसूरीमें हवाखोरी करनेके लिये अथवा अन्य किन्हीं कारणोंसे घूमे, जैसे भारतीय नेतागण देश-हितार्थ घूमते रहते हैं, गवर्नर, वाइसराय, आदि बड़े-बड़े सरकारी हाकिम शिकार खेलने या सरकारी इन्तजाम करने तथा किसी संस्थाका उद्घाटन करनेके लिये दौरा करते हैं, कलक्टर, डिप्टी, तहसीलदार आदि जगह-जगह मुकदमोंकी मिसल भरनेके लिये जिले-जिलेमें दौरा करते रहते हैं। कोई पैदल पृथ्वीकी यात्रा करता है, तो कोई साइकिल द्वारा मुल्क-की यात्रा करता है। बहुतसे अमेरिकन, जर्मन यात्री सामुद्रिक मार्ग

द्वारा जहाजसे या आकाशमार्गद्वारा हवाई जहाजसे पृथ्वीकी सैर करनेके लिये आते रहते हैं।

(४) साधारण यात्रा—उसे कहते हैं, जिसमें मनुष्य अपनी इच्छानुसार चाहे जब, चाहे जहां चल देता है। मान लीजिये कि मथुरा-वृन्दावनके झूलोंका मेला होता है, तो उमङ्ग आनेपर झट वह चल देते हैं। अन्य किसी नगर या तीर्थ-स्थानमें कोई भारी मेला या स्नानपर्व हुआ कि वहींको चल दिये। विवाहोत्सव, जन्मोत्सव आदिमें जानेका अवसर आ जाता है। किसी मित्र आदिसे भेंट करनेके लिये जाना पड़ जाता है अथवा अकस्मात् कोई घटना घटित हो जानेपर अपने स्थानसे दूसरे स्थानको जाना अनिवार्य हो जाता है। बस, इसीको साधारण यात्रा माननी चाहिये।

अन्तमें "यात्राकी व्याख्या" शीर्षक विषय समाप्त करते हुए फिर दुबारा पाठकोंको भली प्रकार समझाये देते हैं कि एक जगहसे दूसरी जगह किसी कार्यवश जानेको यात्रा कहते हैं और जो मनुष्य जावे उसको यात्री कहते हैं और यह भी कि यात्रा बिना कारण की नहीं जाती, स्पष्ट ही है।

—०—

यात्रासे पूर्व

जब कोई मनुष्य किसी तीर्थ या अन्य शुभ कार्यके लिये अपने घरसे निकलकर बाहर जाय, तब उसे किसी पण्डितद्वारा अथवा स्वयं (यदि ज्ञान हो) शुभ मुहूर्त दिखाकर अपने जानेका समय निश्चित कर लेना चाहिये, ताकि मार्ग आदिमें किसी प्रकारकी विघ्न-बाधा पडनेकी शंका न रहे, क्योंकि शुभ कार्य्य शुभ मुहूर्तमें ही करना अच्छा होता है। इसलिये हम भी यहांपर मुहूर्तकी कुछ सरल खास बातें तथा शकुन अशकुनके कुछ विचार सरल भाषामें सर्वसाधारणके लाभार्थ नीचे लिख देते हैं —

दिशाशूल विचार

सोम शनीचर पुरब न चालू। मङ्गल बुध उत्तर दिशि कालू॥
रवी शुक्र जो पश्चिम जाय। हानि होय पथ सुख नहिं पाय॥
बृहस्पति दक्षिण करे पयाना। फिर नहिं समझे ताको आना॥

भावार्थ—सोमवार शनिवारको पूर्वमें न जाय। मङ्गल तथा बुधवारको उत्तरमें न जाय। आदित्यवार एवं शुक्रवारको पश्चिममें और बृहस्पतिवारको दक्षिणमें न जाय। इन वारोंको इन दिशाओंके विपरीत चलना ठीक होता है।

चन्द्रमा, योगिनी और तिथि विचार

दिशाशूल ले जावे वामे, राहु योगिनी पूठ।
सम्मुख लेवे चन्द्रमा, लावे लक्ष्मी लूट॥

यात्रामें चन्द्रमा सम्मुख तथा दाहिने, दिशाशूल बायें अथवा पीठ पीछे और योगिनी राहु पीठ पीछे लाभदायक होती है। १ परिवा, ४ चौथ, १२ द्वादशी, १४ चौदस, ३० अमावस्या—ये तिथियां यात्रामें वर्जित हैं।

छींक-विचार

यात्रा करते समय पीठ या बाई तरफकी छींक अच्छी होती है। सामनेकी छींक लड़ाई करानेवाली होती है। दाहिनी ओरकी छींक धनका नाश कराती है। ऊँची छींक अच्छी और नीची छींक बुरी होती है। अपनी छींक नुकसान देनेवाली होती है अर्थात् बाईं ऊँची पीठकी छींक सुखदाई और नीची, सामनेकी, दाहिनी तथा अपनी छींक नुकसानदायक होती है।

शकुन विचार

सोरठा

दक्षिण पगते श्वान, दक्षिण अंग खुजावई।
नैन कूसकर कान, ऋद्धि सिद्धि जय सुख करें॥

दोहा

श्वान दाहिने पाव ते, खने खाज निज शीश।
राज्य लोभ अरु उदर सुख, कंठ गुदा धन दीश॥

हृदय कंध आदर अधिक, नाक महा सुखकार।
पीठ सुशकुन लाभ है, ठोढी सुयश अपार॥

सोरठा

जो इन अङ्गन स्वान, खनै खाज पग वाम सों।
तो फल अशुभ बखान, काज न कीजे अपशकुन॥
श्वान धुनै जो अंग, अथवा लोटे भूमि पर।
तो निज कारण भङ्ग, अति ही कुशकुन जानिये॥

चौपाई

नव नारी जो सन्मुख आवे, तो मति चलिये शकुन बतावे॥
जो कहु नकुल दरश नर पावे, होय काज सम्पति मिल जावे॥
सब विधि कुशल आव घर नीके, सबै मनोरथ पूजै जीके॥
बाम भाग ले चकवा चारो, सब शुभ शकुनन ते है भारो॥

दोहा

गमन समयमे दाहिने, देखि परे कहुं काग।
धन गण कीरति बहु मिलै, बढै बहुत सौ भाग॥

चौपाई

लिये सुहागिन सुवन उछंगा। की घट भरे होय जल गंगा॥
यहि विधि मिले सो आवत आगे। मनहु मनोरथ सोवत जागे॥
कोयल दीखे जो शुभ तरु पै। मानहु काज भयो निज घरपै॥
सम्मुख धेनु पियावे बाछा। यहि ते सगुन कहो का आछा॥
बाये तीतर प्रातहि बोले। गमन समय अति सुखद अमोले॥
दुपहर ते बोले जो दहिने। तो प्राणी सुख पावे सहिने॥

कारी चिड़िया उल्लू श्वाना । रासभ गीदड़ काग बखाना ॥
जो चलते ये बाये चलहीं । तो धन लक्ष्मी पाये मनहीं ॥

दोहा

बाये गीदड़ शब्द ते, मन वाछित पावन्त ।
आगे दहिने पीठते, महा अशुभ दरशन्त ॥
भलो न होवे दाहिनो, रोगी रीछ सुनार ।
चहु दिशि बोले गीदड़ा, निशिमें अशुभ विचार ॥
जो बायेंसे दाहिने, आवत लेकर मच्छ ।
भोरहि रूप जु देखले, धन प्राप्ती परतच्छ ॥
मृग बाये ते दाहिने, आवे जो तत्काल ।
तो लक्ष्मी प्राप्ती करे, चले प्रात ही काल ॥
गमन समय जो अपशकुन, तै पैठत दुखदाय ।
प्रथमहि होवे शुभ शकुन, तै पैठत सुखदाय ॥
गवन समय पक्षी रटै, फलित वृक्ष पै बैठि ।
भरी दिशामे, तो भलो, अशकुन नाखै ऐठि ॥

श्वास चलनेके अनुसार मुहूर्त विचार

(१) पूर्व और उत्तर दिशाको दाहिना श्वास चलते समय और पश्चिम और दक्षिण दिशाको बाया श्वास चलते समय जाना चाहिये ।

(१) यात्राकालमें दाहिना श्वास चलनेपर दाहिना पैर और बाया श्वास चलनेसे बांया पैर आगे बढ़ाकर श्वास ग्रहणके समय घरसे निकलना चाहिये ।

(३) ईड़ा अर्थात् बायीं नासिकासे श्वास चलते समय और पिंगला अर्थात् दाहिनी नासिकासे श्वास भीतर आते समय कोई कार्य करनेसे शीघ्र ही सफलता होती है।

सफरी सामान

अब जो मनुष्य जिस प्रकारकी यात्रा करनेको जाता है उसको अपने साथ उसी प्रकारका सामान भी ले जाना आवश्यक है, जैसे यदि कोई मनुष्य तीर्थयात्राके लिये जानेका विचार करे, उसे निम्नलिखित वस्तुयें अपने साथमें रखनी चाहिये —

(१) पहनने तथा ओढने-बिछानेके गर्म और ठंडे दोनों प्रकारके कपड़े क्योंकि किसी स्थानपर गर्मी ज्यादा पड़ती है, किसी स्थान पर ठंडक विशेष पड़ती है (२) भोजन बनानेके लिये आवश्यक बर्तन-तवा, लोटा, थाली करछी, पतेली इत्यादि (३) डोर-लोटा (४) लालटेन (५) छतरी (६) लकड़ी (७) चाकू या छुरी (८) ताला-कुञ्जी (९) मोमबत्ती-दियासलाई (१०) हाथमें सोनेकी अगूठी (११) रलकी चाबी (१२) काफी रुपया, जिससे बीच में ही खतम हो जानेपर मुसीबत न उठानी पड़े (१३) कुछ पेटेन्ट दवाइयां—अमृतधारा, अर्क कपूर, अमृताजन, अजीर्ण नाशक चूर्ण या वटी आदि।

कोई व्यापारी मुनीम,गुमाश्ता, किसी कम्पनीका एजेन्ट और दूकानदार आदि परदेश जाय तो उसको निम्नलिखित वस्तुये अपने पास रखनी जरूरी हैं —

कारी चिड़िया उल्लू श्वाना । रासभ गीदड़ काग मस्ताना ॥
जो चलते ये बांयें चलहीं । तो धन लक्ष्मी पावे मनहीं ॥

दोहा

बाये गीदड़ शब्द ते, मन वाछित पावन्त ।
आगे दहिने पीठते, महा अशुभ दरशन्त ॥
भलो न होवे दाहिनो, रोगी रीछ सुनार ।
चहु दिशि बोले गीदड़ा, निशिमें अशुभ विचार ॥
जो बायेंसे दाहिने, आवत लेकर मच्छ ।
भोगहि रूप जु तेलते, धन प्राप्ती परतच्छ ॥
मृग बाये ते दाहिने, आवे जो तत्काल ।
तो लक्ष्मी प्राप्ती करे, चलै प्रात ही काल ॥
गमन समय जो अपशकुन, तै पैठन दुखदाय ।
प्रथमहि होवे शुभ शकुन, तै पैठन सुखदाय ॥
गवन समय पक्षी रटै, फलित वृक्ष पै बैठि ।
भरी दिशामे तो भलो, अशकुन नाखै ऐ ठि ॥

श्वास चलनेके अनुसार मुहूर्त विचार

(१) पूर्व और उत्तर दिशाको दाहिना श्वास चलते समय और पश्चिम और दक्षिण दिशाको बाया श्वास चलते समय जाना चाहिये ।

(१) यात्राकालमें दाहिना श्वास चलनेपर दाहिना पैर और बाया श्वास चलनेसे बाया पैर आगे बढाकर श्वास ग्रहणके समय घरसे निकलना चाहिये ।

(३) ईड़ा अर्थात् बायों नासिकासे श्वास चलते समय और पिंगला अर्थात् दाहिनी नासिकासे श्वास भीतर आते समय कोई कार्य करनेसे शीघ्र ही सफलता होती है।

सफरी सामान

अब जो मनुष्य जिस प्रकारकी यात्रा करनेको जाता है उसको अपने साथ उसी प्रकारका सामान भी ले जाना आवश्यक है, जैसे यदि कोई मनुष्य तीर्थयात्राके लिये जानेका विचार करे, उसे निम्नलिखित वस्तुयें अपने साथमें रखनी चाहिये —

(१) पहनने तथा ओढने-बिछानेके गर्म और ठंडे दोनों प्रकारके कपड़े क्योंकि किसी स्थानपर गर्मी ज्यादा पड़ती है, किसी स्थान पर ठंडक विशेष पड़ती है (२) भोजन बनानेके लिये आवश्यक बर्तन-तवा, लोटा, थाली, करछी, पतेली इत्यादि (३) डोर-लोटा (४) लालटेन (५) छतरी (६) लकड़ी (७) चाकू या छुरी (८) ताला-कुञ्जी (९) मोमबत्ती-दियासलाई (१०) हाथमें सोनेकी अंगूठी (११) रेलकी चाभी (१२) काफी रुपया, जिससे बीच में ही खतम हो जानेपर मुसीबत न उठानी पड़े (१३) कुछ पेटेन्ट दवाइयां—अमृतधारा, अर्क कपूर, अमृताञ्जन, अजीर्ण नाशक चूर्ण या वटी आदि।

कोई व्यापारी मुनीम,गुमाश्ता, किसी कम्पनीका एजेन्ट और दूकानदार आदि परदेश जाय तो उसको निम्नलिखित वस्तुयें अपने पास रखनी जरूरी हैं —

कागे चिड़िया उल्लू श्वाना । गंसभ गीदड़ काग बखाना ॥
जो चलते ये बांये चलहीं । तो धन लक्ष्मी पावे मनहीं ॥

दोहा

बाये गीदड़ शब्द ते, मन वांछित पारन्त ।
आगे दहिने पीठते, महा अशुभ दरशन्त ॥
भलो न होवे दाहिलो, रोगी रीछ सुनार ।
चहु दिशि बोले गीदड़ा, निशिमें अशुभ विचार ॥
जो बायेसे दाहिने, आवत लेकर मच्छ ।
मोरहि रूप जु तेलने, धन प्राप्ती परतच्छ ॥
मृग बाये ते दाहिने, आवे जो तत्काल ।
तो लक्ष्मी प्राप्ती करे, चले प्रात ही काल ॥
गमन समय जो अपशकुन, तैं पैठत दुखदाय ।
प्रथमहि होवे शुभ शकुन, तैं पैठत सुखदाय ॥
गवन समय पक्षी रटै, फलित वृक्ष पै बैठि ।
भरी दिशामे, तो भलो, अशकुन नासे ऐ ठि ॥

श्वास चलनेके अनुसार मुहूर्त विचार

(१) पूर्व और उत्तर दिशाको दाहिना श्वास चलते समय और पश्चिम और दक्षिण दिशाको बांया श्वास चलते समय जाना चाहिये ।

(१) यात्राकालमें दाहिना श्वास चलनेपर दाहिना पैर और बाया श्वास चलनेसे बाया पैर आगे बढाकर श्वास ग्रहणके समय घरसे निकलना चाहिये ।

(१) ओढने, बिछाने, पहननेके कपडे (गर्मी-जाड़ा मौसमके अनुसार) (२) डोर-लोटा (३) छतरी (४) घडी (५) चाकू (६) हाथमें सोनेकी अगूठी (७) हिमानतही (८) आर्डर बुक (९) रसीद बुक (१०) नोटबुक-पेन्सिल (११) सैंपल बक्स (१२) मोमबत्ती (१३) दियासलाई (१४) तालाकुञ्जी (१५) रेलकी चाबी (१६) कुछ आवश्यक पेटेंट दवाइया—अमृतधारा, अर्क कपूर, अजीर्ण नाशक गोलिया, चूरन, अमृताञ्जन।

नोट—रेलकी चाबी हर जगह सौदागरके यहा मिल सकती है और इसे पास रखनेमें रेलवे कम्पनीकी तरफसे किसी प्रकारकी कानूनी रुकावट नहीं है।

किसीने लिखा है कि निम्नलिखित पाच चीजें तो प्रत्येक मनुष्यको हर समय पास रखनी चाहिये —

छुरी, छडी, छतरी, छला, छबड़ा पाच छकार।
इन्हे नित्य ढिग राखिये, अपने अहो कुमार॥



रेल छूटनेसे पहिले

यात्रापथपर आरूढ होनेसे पहिले यात्रीको रेलवेका टाइम (समय) स्टेशनपर जाकर स्टेशनमास्टरसे दरयाफ्त कर लेना चाहिये, बल्कि प्रत्येक यात्रीको हिन्दी या अंग्रेजीका रेलवे टायम टेबिल मगाकर पास रख लेना चाहिये जिससे मार्गमें भी गाडी ठहरने, बदलने आदि का टायम देखनेमें सुविधा रहे। रेलवे टायम टेबिल प्रत्येक स्टेशन पर क़ीमत देकर मोल मिल सक्ता है।

स्टेशनपर यात्रीको रेल छूटनेके वक्तसे आध घंटा पहिले पहुंच जाना चाहिये, ताकि पीछेदर हो जानेसे जल्दमें भागदौड करनेमें किसी तरहकी हानि न उठानी पडे।

स्टेशनपर पहुचकर टिकटघरकी खिडकीसे टिकट खरीदना चाहिये मगर टिकट खरीदते समय अपनी जेब, अटी वगैरहसे साव-धान रहना चाहिये, क्योंकि अक्सर स्टेशनोंपर पाकिटमार, चोर, ठग आदि मनुष्य इसी ताकमें लगे रहते हैं और मौका पानेपर मुसा-फिरकी जेब फाटकर रुपया-पैसा लेकर चम्पत हो जाते हैं और बेचारा मुसाफिर अपनी जेबसे रुपये निकल जानेपर अत्यन्त दुखी होता है इसलिये टिकट खरीदते समय प्रत्येक मुसाफिरको उक्त बात से अवश्य सावधान रहना चाहिये।

टिकट लेकर उसी वक्त देख ले कि ठीक उसी जगहका टिकट जिस जगहका मागा है [illegible], क्योंकि भीडमें

वाली है जरा सावधानी करनेसे आप फौरन उसी गाड़ीमें बैठ जायगे और मुफ्तमें इधर-उधर जाने और धक्के खानेसे बच जायगे।

आज-कल रेलवेने ऐसी सुविधा कर दी है कि दूर जानेवाले मुसाफिरोंके लिये जिनको गाड़ी बदलनी पड़ती है उनकी गाड़ीके साथमें कुछ डिब्बे जोड़ दिये जाते हैं जो जंकशनपर कटकर दूसरी जगह जानेवाली गाड़ीमें जोड़ दिये जाते हैं जिससे मुसाफिरोंको गाड़ीसे उतरकर दूसरी गाड़ीमें बैठनेका कष्ट नहीं होता है और आरामसे बैठे हुए अपने ठिकानेके स्टेशनपर पहुंच जाते हैं—जैसे किसी मुसाफिरको बम्बईसे इलाहाबाद जाना है तो उसको इटारसीपर गाड़ी बदलनी चाहिये, लेकिन "दिल्ली इलाहाबाद" एक्सप्रेसमें इलाहाबाद जानेके लिये डिब्बे जोड़े हुए होते हैं जिससे इलाहाबाद जानेवाले मुसाफिरको इलाहाबादवाले डिब्बेमें बैठकर इटारसी बदलनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी बल्कि वही डिब्बा इलाहाबाद जानेवाली गाड़ीमें इटारसीपर जोड़ दिया जायगा जिससे मुसाफिर नाहककी तकलीफ तथा कुलियोंके झंझटसे बच जायगा। लेकिन डिब्बे देखकर बैठना चाहिये। हर डिब्बापर लिखा रहता है कि वह कहां जानेवाला है, जैसे "दिल्ली—बंबई" 'इलाहाबाद—बंबई''

आजकल रेलवेने यह भी सुविधा कर दी है कि जंकशन स्टेशनों-पर "पैसेंजर गाइड" यानी मुसाफिरोंको रास्ता बतानेवाले मुकर्रर कर दिये गये हैं जो तीसरे दरजेके मुसाफिरखानेमें रहते हैं जिनका काम (ड्यूटी) मुसाफिरोंको हर बातकी सूचना देनेका है। जो भी मुसाफिर उनसे रेलोंके सफरकी बाबत पूछे उसे बाकी बातें बतलाए

टायम, टिकटभाडा, खान-पीने, टट्टी-पाखाना इत्यादिकी व्यवस्थाकी बाबत बिना सकोच पूछ सकते हैं। वे अपने अफसर नहीं हैं, बल्कि रेलवे कर्मचारी हैं जो मुसाफिरोंकी सुविधाके लिये मुकर्रर किये गये हैं।

गाड़ीके डिब्बोंकी व्याख्या

गाडीमें बैठते समय इस बातका ध्यान रखना जरूरी है कि जिस वर्गकी टिकट खरीदी हो उसी वर्गके डिब्बोंमें बैठना चाहिये, किन्तु हमारे बहुतसे भोले-भाले भाई अज्ञानता तथा जल्दीके कारण दूसरे-दूसरे वर्गके डिब्बोंमे बैठ जाते हैं और जरासी असावधानीके कारण नाहककी तकलीफ उठाते हैं। इसलिये उनकी जानकारीके वास्ते गाडीके डिब्बोंकी वर्गानुसार व्याख्या कर देना यहापर अनुचित न होगा।

प्रत्येक पैसेञ्जर गाडीमें कई वर्गके डिब्बे जुडे होते हैं, जैसे तीसरा वर्ग, इण्टर, सेकड इत्यादि।

तीसरा वर्गका डिब्बा—यह सबसे नीचे दरजेका डिब्बा होता है। इसके दरवाजेके ऊपर "III Class" थर्ड क्लास अङ्गरजीमें लिखा रहता है और किसी-किसी रेलवेमें "तीसरा दरजा" हिन्दीमें भी लिखा रहता है इसके अन्दर बैठनेकी जगह लकडीके तख्तोंकी बनी होती है और वे चोके समान बैठा जाता है।

इन्टर क्लास अर्थात् ड्योढ़ा या मझोला दरजा—इसके दरवाजेपर अङ्गरेजीमें "Inter Class"

क्लास लिखा रहता है। इसके अन्दर बैठनेकी जगहपर सेकण्ड क्लासके माफिक गद्दी लगी होती है किन्तु उससे छोटी होती है।

सेकण्ड क्लास–दूसर वर्ग–इसके अन्दर बैठनेकी लम्बी चौडी गद्दीदार अलग-अलग सीटें होती हैं जिनपर एक आदमी अच्छी तरह सो सकता है और रातमें वह सीट एक आदमीके ही लिये रिजर्व यानी मुकर्रर समझी जाती है। उसमें बिजलीके पखे तथा रोशनीकी अधिक व्यवस्था होती है।

फर्स्ट क्लास–पहिला वर्ग—इसके अन्दर भी सेकण्ड क्लासके ही माफिक गद्दी वगैरह रहती हैं किन्तु इसमें उससे भी अधिक व्यवस्था होती है।

जनाना डिब्बा—हर एक वर्गका जनाना डिब्बा अलग-अलग होता है जिसकी भी व्यवस्था ऊपर लिखे मूजब अलग अलग वर्गानुसार होती है जिसमें औरतोंके सिवाय मर्द नहीं बैठ सकते हैं।

सर्वेंट्स कम्पार्टमेन्ट अर्थात् नौकरोंका डिब्बा—

इसमें बैठनेकी व्यवस्था तीसरे दरजेके डिब्बोंके माफिक ही होती है किन्तु यह सिर्फ पहिले और दूसरे वर्गके यात्रियोंके नौकरोंके लिये ही रिजर्व यानी मुकर्रर होता है।

यूरोपियन एग्लो-इंडियन कंपार्टमेन्ट अर्थात् यूरोपियन व ईसाइयोंका डिब्बा

इसमें भी तीसरे वर्गके डिब्बोंके माफिक ही बैठनेका बन्दोबस्त होता है परन्तु यह डिब्बा उन्हीं लोगोंके वास्ते रिजर्व होता है।

इसके अलावा पोस्ट, गार्ड और ब्रेकमेनके डिब्बे होते हैं, जिनमें
नके सिवाय मुसाफिरोंके बैठनेका हुक्म नहीं होता है। प्रत्येक
डब्बेमें रोशनीका काफी बन्दोबस्त होता है और पेशाब, पैखानेके
ल्ये एक कोठरी अलग नियत होती है, जिसमें आबदस्त लेनेके लिये
ानीका नल भी लगा रहता है। प्रत्येक यात्रीको निर्दिष्ट स्थानको
ोड़कर पेशाब-पाखाना दूसरी जगह नहीं करना चाहिये।



यात्रा-पथपर

रेलगाड़ीमें सावधानी

रेलगाडीमें सवार होते ही अपना कुल सामान संभालकर अपनी आखोंके सामने रख लेना चाहिये। यदि हो सके तो अपनी पेटीको बैठनेकी सीटके नीचेके खमेसे जजीरमें बाधकर ताला लगा देना चाहिये, इससे पेटीके चुराये जानेका अन्देशा न रहेगा।

सामानके छोटे बड़े जितने अदद अपने साथ हों या गाडीके खानेमे दे रखे हों, उन सबकी यादी अपनी नोटबुकमें टीप लेनी चाहिये और अपने पहुंचनेके स्टेशनपर उतरते ही सब सामान यादीके माफिक सम्भाल लेना चाहिये।

यदि गाडीसे उतरते समय जल्दीके कारण अथवा गाडीके अधिक न ठहरनेके कारण भूलसे कोई सामान गाडीमे रह जाय, तो उसी समय स्टेशनमास्टरसे बोलकर तार दिलवाना चाहिये और डिब्बेका नम्बर तथा पूरा पता जहापर वह रखा हो और सामानकी भी पूरी हुलिया बतलानी चाहिये, ऐसा करनेसे अगले स्टेशनपर तलाशी की जायगी और सामान उतारकर दूसरी गाडीसे आपके स्टेशनपर भेज दिया जायगा।

यात्रीको इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि बहुतसे छोटे स्ट-

शनोंपर गाडी बहुत कम ठहरा करती है, इसलिये सामान सम्भालकर जल्दी ही उतरना चाहिये।

गाडीके डिब्बेमें बैठ जाने तथा अपना सामान सम्भालकर रख लेनेके बाद चतुराईसे नम्रतापूर्वक पूछकर यह पता लगा लेना चाहिये कि आपके पडोसी यात्री यानी पासमें बैठे हुए कौन-कौन स्टेशनपर उतरेंगे। अक्सर ऐसा देखा गया है कि पडोसी यात्री ही चीज चुराकर एक डिब्बेसे उतरकर दूसरे डिब्बेमें बैठ जाता है। ऐसी दशामें यदि अपना कोई सामान चुरा ले जाय, तो पता लगाया जा सकता है कि अमुक यात्री अमुक स्टेशनपर उतरनेवाला था। वह पहिले क्यों उतर गया? कदाचित वही चीज चुराकर दूसरे डिब्बेमें जा बैठा होगा। उस स्टेशनपर जहां गाडी ज्यादा देरतक खडी रहती हो, गार्डको रिपोर्टकर उस आदमीकी तलाश करानी चाहिये, ऐसा एक दफे मुझसे हो गया है, जो आगे "अपनी बीती" में आप देखेंगे।

यात्रीको-गाडीमें इस तरह नींद लेनी चाहिये जो हर स्टेशनपर गाडीके ठहरते ही आंख खुल जाय। और आंख खुलते ही अपना सामान देख लो कि अपना सामान बराबर रखा है, नहीं तो असावधानी करनेसे सामान चला जायगा, तो यह भी पता नहीं लग सकेगा कि हमारा सामान कौन-से स्टेशनके बीच चला गया और फिर पुलिस भी जल्दी पता नहीं लगा सकेगी।

रास्तेमें सफर करते हुए बारबार हर स्टेशनपर सैलानियोंकी तरह उतरना चढना हानिकर है।

रलमें बैठे हुए यात्रियोंके साथ किसी प्रकारका नशा,

तम्बाकू, सिगरेट, पान आदि खाना-पीना नहीं चाहिये और न दूसरे-को देना ही चाहिये।

प्लैटफार्म, मुसाफिरखाने या गाडीमें किसी भी अनजान मनुष्यके हाथकी कोई चीज नहीं खानी चाहिये, क्योकि आजकल जहर देकर ठगनेवालोंकी तादाद विशेष बढ रही है। इसलिये किसी भी अनजान मनुष्यके हाथकी चीज खानेके पहिले अपने पासवाले किसी कर्मचारी या अफसरको दिखाकर खाना चाहिये। इसी बारेमें रलवेने निम्न प्रकारकी सूचना निकालकर जनताको सावधान किया है। "मुसाफिरोंको चलती गाडीमें जहर देनेवाले ठगोंसे सावधान रहना चाहिये।"

हजारों भोले मुसाफिर रात-दिन यात्रा करते है। हजारों लोग विवाह, रिश्तेदारी आदिमें जाते रहते हैं और अपना सामान बक्स, गठरी आदिमें ले जाते हैं। व्यापारी लोग नोट, नगदी आदि लेकर सफर करते हैं। इन सब लोगोंपर रेलके चोरोंकी आख रहती है और इनमेंसे अक्सर लोग ठगे जाते हैं।

जहर देकर ठगनेवालोंके तीन-चार आदमियोंके गिरोह रहते हैं। यह लोग बड़े जंकशन स्टेशनोंपर अक्सर रहते है, जहापर गाडिया देरतक खडी रहती हैं। जहर प्राय मिठाई, पान, बीडी, सिगरट आदिमें मिश्रित हो सकता है और इन्हींके द्वारा दिया जाता है। इस जहरकी मामूली मात्रासे मनुष्य मरता नहीं है, परन्तु बेहोश हो जाता है।

ये लोग रातमें सफर करते हैं। जिस गाडीमें मालदार लोग

बैठे होते हैं उसीमें दो-तीन ठग मुसाफिरके रूपमें आ बैठते हैं और मुसाफिरोंसे बात-चीत करने लगते हैं। गाडीमें जो मनुष्य ज्यादा मालदार दिखाई पडता है, उसीपर इन लोगोंकी खास निगाह रहती है। पीछे ठगोंका एक साथी मिठाई लेकर आता है जो देखनेमें बहुत बढ़िया और साफ होती है। साथी ठग मिठाई खरीदकर खाते हैं और तारीफ करते हैं, जिससे और लोग भी खरीदें।

इस प्रकार मुसाफिरोंको जहर मिली मिठाई दी जाती है। गाड़ी चलती होती है और लोगोंको बेहोशीकी नींद आ जाती है। ठग लोग आगेके स्टेशनके करीब मुसाफिरोंका सामान खिड़कीसे बाहर डाल देते हैं। स्टेशनके करीब जब गाडीकी रफ्तार कम हो जाती है, ये लोग कूदकर सामान उठा ले जाते हैं।

रेलमें पुस्तक या अखबार खरीदकर उसके पृष्ठोंको थूक लगाकर पलटकर नहीं पढ़ना चाहिये, क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि बहुतसे दुश्मन पुस्तकोंके पृष्ठोंपर कोई ऐसा जहरीला मसाला लगा देते हैं, जिसके थूक लगाकर मुंहमें पहुचनेसे मनुष्य बेहोश हो जाता है। इसलिये प्रत्येक यात्रीको उक्त बातसे विशेष सावधान रहना चाहिये।

रातमें गाडीके तख्तोंके नीचे चोर-ठग सो जाते हैं और किसी भी यात्रीके मालको दाव लगनेपर झट ले चम्पत हो जाते हैं। इसलिये लम्बी सफर करनेवाले मुसाफिरोंको तख्तोंके नीचे सामान रखते समय इस बातका अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

चलती हुई गाडीमें खिडकीद्वारा बाहरकी तरफ सिर निकालकर कभी नहीं बैठना चाहिये, क्योंकि एक तो हवाके जोरसे सिरपरकी टोपी, पगडी या साफा गिर जानेका भय रहता है, दूसरे आंखमें इञ्जनका कोयला गिर जानेसे अधिक कष्ट होता है, तीसरे सिगनल और खम्भे आदि टकरा जानेका भय रहता है, जिसके कारण बहुतसे लोगोंके प्राणतक जाते देखे गये हैं। इसलिये गाडीमें भीतर ही सिर किये बैठे रहना चाहिये।

डिब्बेके अन्दर थूकने या कूडा-करकट कर देनेसे यात्रियोंके आरोग्यतामें बाधा पड़ती है, इसलिये ऐसा कर्म डिब्बेके बाहर ही करना उचित है।

स्टेशनपर गाडी खडी हो जानेपर मुसाफिरको गाडीका दरवाजा खोलकर उतरना-चढना चाहिये। चलती गाडीमें उतरने चढनेमें खतरा रहता है।

लम्बी सफर करनेवाले यात्रियोंको गाडीमें बैठते समय अपने बैठनेवाले डिब्बेका नम्बर तथा गाडीका नम्बर लिख लेना चाहिये, क्योंकि यदि आप किसी कार्यवश स्टेशनपर उतर पडे और इतनेमें गाडी चल दी और आपका सामान गाडीमें चला जाय, तो आप उसी समय गाडीके डिब्बेका नम्बर बताकर स्टेशनमास्टरद्वारा अगले स्टेशनको तार दिलाकर अपना सामान उतरवा सकते हैं और फिर दूसरी गाडीसे जाकर अपना सामान सम्हाल सकते हैं।

चलती गाडीमें बहुधा टिकट चेक करनेवाले रेलवे-कर्मचारी टिकट चेक किया करते हैं। उनके पूछिकट छनेपर टिकट फौरन

तला देना चाहिये। किन्तु यह ध्यान रखना चाहिये कि रेलवेने जेन्हें टिकट चेक करनेके लिये मुकर्रर किये हैं उनको बिल्ला तथा रदी दो होती है। बिल्लेमें लिखा होता है —T T E, T. T ., T T C, Crewman Ticket checker इत्यादि।

इस तरह उनकी ड्यूटीका नाम लिखा होता है। जो ऐसे बिल्ला और वरदीयुक्त रलवे कर्मचारी हों, उनको ही टिकट बतलाना चाहिये। दूसरे बिना बिल्ला, वरदीवालेको नहीं बतलाना चाहिये। अक्सर ऐसा देखा गया है कि बहुतसे बदमाशलोग कोट-पतलून पहनकर साहब बहादुरी लिबासमें फिरते हैं और मुसाफिरोंको धोखा देनेकी नीयतसे टिकट चेक करते हैं। उनको टिकट नहीं बतलाना चाहिये। दूसरे ऐसे ही टिकट चेकरोंके साथ जो कुंजी-कांटा लेकर वजन तोलनेके लिये रहते हैं वह भी कभी-कभी टिकट देखते रहते हैं। उनको भी टिकट नहीं दिखलाना चाहिये। उन्हें टिकट चेक करनेका अधिकार नहीं है।

लम्बी सफर करनेवाले यात्रियोंको यदि किसी स्टेशनपर नित्यकर्म, शौच, स्नानादिसे निवृत्त होनेके लिये उतरना होवे, तो पहिले रेलके ठहरनेका टाइम गार्ड या स्टेशनमास्टरसे ठीक-ठीक पूछ लेना चाहिये कि कितनी देर गाड़ी खड़ी होगी। यदि उतने समयमें आप अपने कर्मसे निवृत्त हो सकें, तब तो उतरे, वरना न उतरे, क्योंकि अक्सर देखा गया है कि बहुतसे मुसाफिर मामूली कुली वगैरह रेलवे-नौकरसे गाड़ीके ठहरनेका समय

पडते हैं और गाडी चली जाती है, तब बड़ी मुसीबत उठानी पडती है। ऐसा एक दफे मुझसे भी हो चुका है, जो आगे "अपनी बीती" मे देखेंगे। इसलिये गाडीके ठहरनेका समय गार्ड या स्टेशन मास्टरसे ही पूछना चाहिये।

गाडी चलते समय उसका इनचार्ज गार्ड होता है और स्टेशनपर स्टेशनमास्टर गाडी तथा स्टेशनका इनचार्ज होता है। खाने-पीनेके लिये रेलवेने स्टेशनोंपर कुछ लाइसेन्स वेण्डर यानी मिठाई बेचनेवाले मुकर्रर कर दिये हैं, जिनसे आप खाने-पीनेका सामान मोल ले सकते हैं। अगर आपको कोई विशेष खानेकी तथा आप समझते हों कि जो चीज स्टेशनपर तैयार नहीं मिल सकेगी, उसके लिये इच्छा हो तो आप पहिले स्टेशनसे गार्डके जरिये तार दिला सकते हैं। गार्ड फौरन आपके कथनानुसार बिना पैसे तारसे खबर कर देगा।

यदि आपके डिब्बेमे रोशनी, टट्टी, नल वगैरहका कष्ट हो, कुली लोग तग करें, लाइसेन्स वेंडर (सामान बेचनेवाले) किसी तरहका खराब सामान दें या कम दे या डिब्बेमे नियमित मुसाफिरोंसे अधिक भीड हो जावे तो आप फौरन स्टेशनमास्टरसे शिकायत कर सकते हैं, और वह उसका उचित बन्दोबस्त करेंगे।

स्टेशन मास्टर, गार्ड या कोई रेलवे सर्वेन्ट (कर्मचारी) आपके अफसर नहीं हैं। वे केवल रेलवे-कर्मचारी हैं, जिन्हे रेलवेने मुसाफिरोंके आने-जानेका बन्दोबस्त करनेके लिये मुकर्रर किये हैं जिससे रेलवेका काम सुचारु-रूपसे चल सके और यात्रियोंको रेलमें किसी अनुचित प्रकारका कष्ट न हो सके।

रेलवे-कर्मचारियोंका कर्त्तव्य (ड्यूटी) अलग स्थानमें लिखा गया है जिससे यह मालूम हो जायगा कि अमुक-अमुक रेलवे-कर्मचारीका यात्रीके प्रति क्या कर्त्तव्य है। रेलवेका मुख्य उद्देश्य है कि उसके कर्मचारी यात्रियोंके प्रति नम्रता व सभ्यताका व्यवहार करें जिससे उसकी प्रतिष्ठा बढे, कारण कि रेलवेका सारा कारोबार यात्रियोंके ही ऊपर निर्भर है।

अपने पहुचनेवाले मुकामके स्टेशन आनेके पहिले ही सब सामान सभालकर ठीक कर लेना चाहिये और मुकाम आनेपर फौरन गाडीसे उतर जाना चाहिये और अपना कुल सामान सभाल कर उतार लेना चाहिये।

यदि किसी मुसाफिरको स्टेशनसे दूर गाव या नगरमें जाना हो, तो स्टेशनपर इक्का, तागा, मोटर आदि सवारी मिल सकती है। आप उनमें बैठकर जा सकते हैं। मगर बैठते समय इक्का, तागा या मोटरका नम्बर देख लेना चाहिये तथा यह भी देख लेना जरूरी है कि सवारी-के साथ पूरा सामान है तथा सवारी ठीक है जिससे रास्तेमें किसी तरहका कष्ट न पहुचे।

मुसाफिरोंको मोटरमें बैठते समय यह अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि मोटरकी छतपर न बैठें, क्योंकि छतपर बैठे हुए मुसाफिर रास्तेमें पेडोंकी शाखा आदिसे झटका खाकर नीचे गिर पडते हैं और अत्यन्त दु ख उठाते हैं और कभी-कभी प्राणतक दे बैठते हैं। मोटर-वाले मेले तमाशेके अवसरपर ज्यादा भीडके कारण पैसा ऐंठनेके लिये मुसाफिरोंको अक्सर सामान रखनेकी जगह छतपर बैठा देते हैं।

ठहरनेका स्थान

जब कोई यात्री किसी मुकामपर पहुंचता है, तब उसको वहांपर ठहरनेके लिये स्थान ढूंढना आवश्यक है। यदि उस नगरमें आपका कोई परिचित व्यक्ति रहता है, तब तो उसके पास ठहर जाइये और जहांपर ऐसा कोई परिचित व्यक्ति न हो तब उस नगरकी धर्मशालामें ठहरियेगा और उस धर्मशालामें एक कोठरी लेकर उसमें अपना निजका ताला लगा दीजिये। वैसे तो प्रत्येक शहरमें धर्मशाला और सराय दोनों ही होती हैं, परन्तु हिन्दुओंको सरायके बनिस्बत धर्मशाला अति अधिक उपयोगी होगी। यहांपर हम धर्मशाला तथा सरायोंके सम्बन्धमें कुछ आवश्यक बातें लिखना उचित समझते हैं जिनसे पाठकोंको जानकारी हो जाय।

अक्सर सरायोंमें देखनेमें आया है कि जो कोई भी मुसाफिर सरायमें ठहरता है उसे सरायकी भटियारीद्वारा ठहराया हुआ किराया तो देना ही पडता है, परन्तु साथ ही सरायमें रहनेवाली खानगियोंको बगैर पान-फूल चढ़ाये उनका टैक्स नहीं चुक पाता और कभी-कभी तो वे भोले-भाले मुसाफिरसे अपनी कामोद्दीपन आकर्षणशक्ति द्वारा जाल फैलाकर उसका सब माल-मत्तातक झपटनेमें कसर नहीं रखतीं, जिससे बेचारे मुसाफिरको अपनी बहुमूल्य शक्ति और धन

नष्ट करनेके साथ-साथ इनाममे निर्बलता और गर्मी आतशकका रोग गलेमे बाधकर उल्टे पैरों अपने घरकी राह लेनी पड़ती है। इसलिये यात्रियोंको सरायमे ठहरते समय उक्त बातमे अवश्य सावधान रहना चाहिये।

रही धर्मशालाओंकी बात, सो उनका भी यह हाल है कि यद्यपि दानियोंने अपनी गाढ़ी कमाईका पैसा लगाकर धर्मशालायें बनवायी हैं, जिनमे प्रत्येक हिन्दूयात्री ठहरकर लाभ उठावे तथापि कुछ दानियोंकी विशेष देख-रेख न रहनेके कारण उनके मुकर्रर किये हुए प्रबन्धक कर्मचारीलोग कहीं-कहींपर यात्रियोंको कष्ट देकर अनुचित लाभ उठाते हैं, क्योंकि अक्सर देखा गया है कि मेले, तमाशे, पर्व आदिके अवसरपर अधिक भीड़ होनेसे बेचारे गरीब मुसाफिरोंको धर्मशालाके कर्मचारियोंद्वारा या तो फटकार खानी पड़ती है या रुपये-पैसेकी भेंट चढ़ाकर अपने आपको दुःखित होना पड़ता है। इसलिये हम यात्रियोंका ध्यान इस अन्यायकी ओर आकर्षित करते हैं कि वे इन आपत्तियोंको सहकर चुप न बैठ जाय, बल्कि धर्मशालाओंके संरक्षकोंसे पत्रद्वारा सूचितकर इन आपत्तियोंको दूर करनेका अनुरोध करें, जिससे भावी यात्रियोंको इन कष्टोंका सामना न करना पड़े।

यात्रियोंको धर्मशालाके नियमोंका पालन जरूर करना चाहिये। तीर्थस्थानोपर तीर्थयात्रियोंके लिये वहाके पण्डोंके मकानात भी विशेषकर यात्रियोंके ठहरनेके लिये बने होते हैं, इसलिये तीर्थयात्री पण्डोंके मकानोंसे भी ठहरनेका काम निकाल सकते हैं।

यात्रियोंको मकानमें उतरते समय निम्नलिखित बातें अवश्य ध्यानमें रखनी चाहिये। उनसे सावधान रहना चाहिये—

(१) मकानकी सफाई, पाकशाला, जलकी समीपता स्वतंत्रता, टट्टी-पैखानेका सुभीता।

(२) जिस मकानमें सूर्यका प्रकाश न पड़ता हो तथा जिसमें शील, नमी या सर्दी रहती हो उसमें कभी न ठहरें।

(३) यदि बाल-बच्चे साथ हों तो अपना निराला मकान लो जिसमें किसी दूसरेकी उपाधि न लगी हो।

(४) उतरनेके पहिले मकानका किराया यदि हो तो तय कर लो, क्योंकि तीर्थस्थानोंपर प्राय किराया जरूरतसे ज्यादा लिया जाता है।

(५) अपने मकानको किसी पड़ोसीके विश्वासपर छोड़ो। किसी नये आदमीको अपने डेरेमें मत आने दो।

(६) अपने बाल बच्चे या स्त्रीजनोंको अकेले गहना पहनाकर या इनको स्वतन्त्र होकर किसी दूसरेके साथ न घूमने-फिरने दो, क्योंकि न मालूम कौन किस इच्छासे फिरता है।

(७) गाने-बजानेवाले, सौदा बेचनेवाले या मँगते फकीरोंको अपने डेरेमें नहीं बैठाना चाहिये।

(८) परदेशमें बिना जान-पहचानवाले आदमीका इतबार कभी न करना तथा उसके हाथका दिया हुआ प्रसाद, मिठाई, पान, तम्बाकू, सुलफा आदि नहीं खाना पीना।

(९) डेरेके पास खराब मुहब्बतका चिन्ह मालूम पडे तो विशेप सावधान होकर रहो या मकान बदल लो ।

(१०) अचानक कोई आपत्ति आ पडे, तो मकानदारको सूचना देकर पुलिसमें रिपोर्ट कर दो ।

(११) ठहरनेके स्थान सम्बन्धी रक्षा सर्व प्रकारसे स्वय करनी चाहिये, क्योंकि विशेपकर तीर्थस्थानोंमें अनेक कालवेली, विपयासक्त नाना प्रकारके रूपधारी फिरा करते हैं, अतएव हमेशा सावधान रहना चाहिये ।



भोजन-व्यवस्था

– यात्रियोंको जहांतक हो सके अपने स्थानमें कच्ची ही रसोई बनाकर खानी चाहिये और थोडा आहार करना चाहिये। यदि स्वयं इन्तजाम न कर सकें, तो हिन्दूहोटलोंमें भी कची खा सकते हैं, यदि पक्का ही सामान खाने को मिले, तो दूकानदारसे कच्चा-पक्का, सडा-बूजा आदि देखकर ताजा और साफ लेना चाहिये, जिसमें आरोग्यतामें बाधा न आने पावे। तेलकी सडी-गली चाट खाना, कच्चे-पक्के फल बेवक्त खाना, बेवक्त इधर उधर घूमते रहना और भङ्ग-बूटी, सुलफा, अफीम आदि नशीली चीजोंका या दूसरे मादक पदार्थोंका सेवन करना सदा त्याग देना चाहिये; क्योंकि आहार-विहारकी उलट-फेर ही रोगका कारण हुआ करती है, जैसा कि लिखा है।

मिथ्याहार विहाराभ्यां दोषास्यामाशयश्रय।
वाहे निरस्य कोष्ठाग्नि कष्टदा स्यू रसानुगा॥

पहाडी मार्गद्वारा पैदल या कंडी झापानमें बैठकर जो यात्रा की जाती है उस यात्राके मार्गमें खान-पानका विशेष ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि पहाडी आबहवा विशेष ठण्डी रहनेके कारण उसमें आक्सीजन (Oxizan) कम होती है और ज्यों-ज्यों ऊपरकी चढाई आती जायगी त्यों त्यों ठण्डक अधिक होसेने

आक्सीजन (Oxygen) कम होती जायगी । इसलिये ऐसे स्थान और समयमें यात्रियोंको खट्टा, चरपरा, गरिष्ठ पदार्थ न खाकर पुष्टिकारक पदार्थ घी, दूध इत्यादिका सेवन ही विशेष लाभदायक होगा, खट्टी चरपरी चीजें खानेसे अतिसार बुखार आदि रोग हो जाते हैं, सो भी यात्रियोंको पैदल चलनेकी हालतमें तो ये रोग विशेष कष्ट देते हैं। अत यात्रियोंको मार्गमें सेवन करते रहने के लिये भी कोई गर्म दवा चन्द्रोदय, कस्तूरी, गो-लोचन, अभ्रक-भस्मादि पास रखनी चाहिये।

जलपान

शुद्ध जल कूपो, झरनो या बहती नदियोंका ही काममें लाना चाहिये, क्योंकि तालाब या कुण्डोंमे कभी-कभी मेलेकी भीड होनेपर यात्रीलोग साबुन लगाय मैले कपडे धोने लग जाते हैं और सिरमें दही, तल मलकर नहाने लग जाते हैं। इससे जल खराब हो जाता है और कभी-कभी मक्खियोकी सैतानीसे भी कुए और नदियोके किनारेका जल दूषित हो जाता है। जिस कूएके पास मोरी निकली हो या जिसमे पेडकी पत्तिया गिरती हो या जिस कूएका पानी चालू न हो और नदीक उस जगहका पानो जहा गंदा नाला निकला हो, कभी न पीना चाहिये। मल-मूत्र त्यागनेके बाद तुरन्त जल कभी न पीना चाहिये।

पत्र-व्यवहार

ज्यादा समयके लिये यात्रा करनेवाले यात्रियोंको पत्र-व्यवहार करते रहना भी जरूरी है, जिससे अपने घरवाले तथा मालिक फार्मको अपनी राजी-खुशी तथा अपने काम काजकी सूचना मिलती रहे। यदि परदेशमे यात्रीका कोई पहिला परिचित मनुष्य मिल जाय, तब तो उसके ठिकानेसे पत्र-व्यवहार करना चाहिये यानी अपने पत्रका उत्तर उसके ठिकानेपर मगाना चाहिये, या अपने ठहरे हुए स्थान धर्मशालेके पतेसे पत्रोत्तर मगाना चाहिये अथवा जिस नगरमें ठहरे हों उस नगरके पोस्ट-आफिसके पोस्ट-मास्टरके द्वारा या स्टेशनके स्टेशनमास्टरकी मारफत भी पत्रका उत्तर मंगवा सकते हैं। पोस्टमास्टर या स्टेशनमास्टरकी मारफत पत्र मंगानेपर आप पोस्टमास्टर या स्टेशनमास्टरके पास अपना नाम बताकर कहिये कि अमुक नामकी चिट्ठी आयी हो, तो मुझे देनेकी कृपा करें। इतना ही कहनेपर आपको आपकी चिट्ठी, यदि कोई आयी होगी, तो मिल जायगी। इसी प्रकार आप तार मनीआर्डर वगैरह भी उक्त ठिकानेपर मगवा सकते हैं। परन्तु मनिआर्डर मगानेसे पूर्व आपको स्टेशनमास्टर या पोस्टमास्टरसे इत्तिला कर देनी चाहिये कि मेरे नामका मनिआर्डर आनेवाला है सो मुझे मिल

जाना चाहिये, मैं अमुक जगहपर हूं। पत्रका उत्तर मंगानेके लिये अपना पता लिखते समय अपने नामके साथ उस शहर या गांवका नाम (जिस शहरके आप निवासी हैं) लिखना कभी न भूलना चाहिये। जैसे गोपालप्रसाद हाथरसवाले। पत्रका ठिकाना लिखते समय पूरा पता लिखना चाहिये यानी नाम, गांव, पोस्ट आफिस, जिला इस प्रकार लिखना चाहिये। पोस्ट आफिसका नाम अंग्रेजीमें लिखना अच्छा होता है।

कुछ पते लिखनेके नमूने

(१)

विश्वनाथ कानपुरवाले
C/o पोस्ट मास्टर,
पोस्ट आफिस हरिद्वार,
जि० देहरादून।

(२)

गोविन्द प्रसाद हाथरसवाले
C/o स्टेशन मास्टर
बांदीकुई
बी० बी०एण्ड०सी० आई० रे०
(जैपुर)

(३)

प० रामदत्तशर्म्मा वैद्य रायेवाले
C/o मि० सोहनलाल दूबे
न्यूरोड पो० हैदराबाद
P O Hydrabad
Daccan

(४)

मोहनलाल गुप्ता आगरेवाले
C/o सिंधीधर्मशाला
बंगालीघाट
पो० मथुरा (यू० पी०)

(५)

घाकेलाल मुनीम दिल्लीवाले
C/o मल्लीमल गयालालआढतिया
पो० कोसी कला
जि० मथुरा (यू०पी०)

(६)

सेठ जीवाभाई बम्बईवाले
C/o सीताराम गंगापुरोहित
पो० ऋषीकेश
जि० देहरादून

(७)

ठाकुर बलवंत सिंह चौहान
मुकाम सिरसौदा
पो० रूपवास
जि० भरतपुर

(८)

यात्रामें स्त्रियोंकी दुर्दशा

और

उसका प्रतिकार

भारी पर्व मेला आदिक अवसरपर स्त्रिया तथा बच्चे भी रेल-गाडीमे मनुष्योंके साथ-साथ भेंड-बकरिओंकी तरह भरे चले जाते हैं, जिससे उन स्त्रियोंकी बडी मट्टी पलीत होती है। कोई तो गर्मीमें पसीनेसे तरो-बोर हो जाती हैं तथा किसीका गर्मीके मार जी घुट जाता है। किसीको मनुष्योंके हाथोंसे अपना अग मसकना नजर आता है, तो किसी-किसी स्त्रियोंके दुधमु हे बच्चोंके भीडमे दबकर प्राण पखेरू उड जाते हैं और वे बहुत मुशकिलसे राम-राम करती नियत स्थानपर पहुच पाती हैं।

बहुधा स्त्रिया मदिरोंकी बनावट, भीतोंकी रङ्गावट बिछौनोंकी बिछावट, वस्त्रोंकी सजावट, झाड-फानूसोंकी झल्झलाहट, कोचोंकी चमचमाहट, गवैयोंकी गल्गलाहट, तन्दूरेकी तुनतुनाहट, सारगीकी सुनसुनाहट, चित्रोंकी सुन्दरता, मूर्त्तियोंकी अद्भुतता, छोकरोंका नाच आदि देखनेके लिये अपनी दुर्दशा करानेको ऐसे स्थानोंमें घुस जाती हैं कि जहापर निम्नलिखित लीलायें प्राय हुआ करती हैं।

१ भीडमे स्त्री-पुरुषोंके परस्पर पीठसे पीठ और छातीसे छाती मिल जाते है।

२ विचारो गरीब निर्बल अबलायें तो भीड-भाडके धूम-धडाके

और धक्का-धुक्कीके कारण पृथ्वीसे एक-एक हाथ ऊँची उठ जाती हैं और उस भारी भीडमें मनुष्योंकी रेल-पेलके कारण ऐसी भिच जाती हैं कि उनकी श्वास ऊपरकी ऊपर और नीचेकी नीचे रह जाती है। यदि कहीं नीचे पैरोंमें गिर पडीं तो मर ही जाती हैं, यदि न मरीं तो अधमरी अवस्था अवश्य हो जाती है।

३ अच्छे-अच्छे बलवान मनुष्यतक भी उस भीडमें हक्के-बक्के रह जाते हैं।

४ पर हा, चोर, जार, बदमाश लोगोंकी खूब बन आती है, वह चाहे जिसका अधर ऊपरको उठा लेते हैं, चाहे जिसे धक्का देकर पीछे हटा देते हैं, चाहे जिसका हाथ खींच आगे धर लेते हैं, चाहे जिसकी इज्जत बिगाड़ देते हैं और चाहे जिसका वस्त्र, आभूषण झपट लेते हैं।

५ बहुधा कितने ही मन्दिरोंमे स्वर्गकी भूखी और धर्म्मकी प्यासी हिन्दू-स्त्रियोंको मुसलमान द्वारपालोंके कोडोका भी स्वाद लेना पडता है, हरएक किस्मके बदमाशोंकी बदमाशीका मजा—जायका चखना पड़ता है, और अतमें धर्म्म-धक्के सहने पडते हैं।

६ होलीके दिनोंमे बहुधा पुजारीलोग नवयौवनाओंके कुच, कपोल और नेत्रादि अंगोंको ताक-ताककर रंग-भरी पिचकारी तान-तानकर मारते हैं, और बहाना करते हैं कि श्री ठाकुरजी होली खेलते हैं।

ऊपर बतलाई हुई दुर्दशाओसे बचनेके लिये कुछ उपाय नीचे लिखे जाते हैं —

१ स्त्री तथा बच्चोंको भारी भीड़वाले मेलेमें हरगिज न जाने दो।

२ स्त्री तथा बच्चोंको किसी हल्के मेले या उठौरपर ले जाकर प्राचीन रमणीक देवस्थानोंके दर्शन कराना तथा नवीन नवीन बातोंका ज्ञान कराना चाहिये, नकि गुण्ड और बदमाश लोगों-द्वारा गाये जानेवाले अश्लील रसिया, गजल, नाच-कूद आदि दिखानेकी चेष्टा की जाय या उन्हें म्वतन्त्र कर दिया जाय।

३ स्त्रियोंको भीड़के समय रेल्गाड़ीके जनाने डिब्बेमें बैठाना चाहिये, तथा शिक्षित मनुष्योंका कर्त्तव्य है कि वह रेल्वेसे भारी मेलेके अवसरपर स्त्रियोंके लिये एक डिब्बेसे अधिक रिजर्व रखनेके लिये अनुरोध करें, ताकि बहिन, बेटी और बहुओंकी दुर्दशा न होने पावे।

स्त्रियोंके जनाने डिब्बेमें बैठाकर किसी कुजातिकी कुटनी स्त्रीके फंदेमें फँसनेसे होशियार रहना चाहिये।

५ बच्चोंकी मा अपने बच्चोंको रास्तेमें खिड़कीके बाहर मुँह करके कभी न बैठने दे और न कभी खिड़की वगैरह खोलने आदि हरकतें करने दे।

६ असबाबको अपनी निगाहके सामने रखना चाहिये।

७ स्त्रियोंमें यह स्वाभाविक आदत पायी जाती है कि चाहे जितनी दूर या पासकी और जाति या कुजातिकी स्त्री क्यों न हों, आपसमें बोल चाल करके झट प्रेम पैदा कर लेती हैं। इसलिये ऐसा करते समय यह सदा ध्यान रहे कि सफरमें किसी गैर जान-पहचानवाली स्त्रीके हाथका पान, वस्तु, जल आदि कभी न खावें।

स्नान-पर्वके यात्रियोंको चेतावनी

जो सज्जन गंगा-यमुना या किसी नदीके तीर्थ-स्थानोंपर स्नान करनेके हेतु जाते हैं, उनको स्नान करते समय नीचे लिखी बातें ध्यानमे रखनी चाहिये —

(१) यात्रियोंको पतला कपड़ा पहनकर स्नान नहीं करना चाहिये , जिसमे कि अंग दिखायी देता हो । इससे धर्मके बदले पाप लगता है ।

(२) आप जिस समय स्नान करें , आपको चाहिये कि अपना असबाब व रुपये-पैसे और कीमती वस्तुयें अपने सहकारी आदमीके या उस घाटियेके हाथ सपुर्द करके, जिसके पास तीर्थ-पुरोहितोंकी पचायती निशानी हो, स्नान करें , क्योंकि ऐसे स्थानोंपर स्नान-ध्यानके बहानेसे अनेक माया-रूपी चालाक लगे रहते हैं और मागनेके बहानेसे, मंगते बदमाश जिनके आसरेसे नकली घाटिये भी बैठते हैं, आपको हानि पहुचा दें, तो कोई सन्देह नहीं । ...
हर किस्मके विश्वासघाती मनुष्य फिरते ...
पहचान सकती । तीर्थ-स्थानोंमें तीर्थ-पु...

(३) जो मनुष्य अपने असबाब या रुपये-पैसे, कीमती द्रव्यको घाटपर रखकर स्नान करेगा या जो स्त्री हाथ-कानमें गहना चमकाती हुई स्नान करेगी या कोई आदमी अपना नौली, बटुआ, जाकिट या कपड़ोंमें छिपा रखकर स्नान करेगा, वह अवश्य खतरा खायेगा, क्योंकि बहुतसे घाटिये भी इसी आसरपर बैठते हैं जिनके ठग, बद-माश और उचक्के लगे रहते हैं। कोई मांगनेके बहाने, कोई स्नानके बहाने, कोई जेण्टिलमैन बनकर, कोई जलमें घुसकर, कोई घाटमें, कोई साधुका वेष बनाके अपनी मुहब्बतका असर जमाता हुआ रास्तेमें ही साथ लग जाता है, या अपनेको तीर्थ-पण्डा बताकर भी अनेक धोखा देते हैं, अतएव इनसे सावधान रहना चाहिये।

(४) आजकल बहुतसे प्रपंची, धोखेबाज, गोशाला, पाठशाला, अनाथालय, धर्मशालादिके नामपर चंदा मांगकर धन-उपार्जन करते हैं, जो बहुधा किसी भी संस्थासे सम्बन्ध नहीं रखते और अधि-कांश स्वयं ही डकार जाते हैं। इसलिये ऐसे याचकोंसे सावधान रहना चाहिये और दान देते समय संस्थाका स्वयं निरीक्षणकर या पूरा पता लगाकर देना चाहिये।

(५) एकाएक बिना पहचाने किसीके साथ स्नान करने या मन्दिरोंके दर्शन करने चले जाना ठीक नहीं। ऐसे काममें किसी विश्वासी मनुष्यको साथ ले जाना चाहिये और आम रास्ता छोड़कर इधर-उधर नहीं जाना चाहिये

(६) गंगा, यमुना तथा अन्य नदियोंमें घाटोंके नीचे बेमालूम गड्ढे वगैरह बने रहते हैं, जिनमें कोई-कोई अनजान परदेशी यात्री

स्नान करते समय डूबकर प्राण दे बैठते हैं। इसलिये हमेशा स्नान करते समय सिर्फ सीढ़ियोंपर ही बैठकर नहानेका ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि गहरे पानीमें स्नान करनेसे जल-जीव—मगर, मोट अथवा गोतेखोर आदिके घसीट ले जानेका भय रहता है।

(७) नदीके किनारे रसोई इत्यादि बनाना हो तो डेरा दूर डालना चाहिये, क्योंकि अक्सर नदियोंमें एकाएक बाढ आ जानेकी आशंका रहती है।



भारतवर्षके तीर्थ-स्थान

वृजभूमिके तीर्थ-स्थान

१ मथुरा—स्टेशन मथुरा [Muttra] G I P तथा R. M. R । द्वारकाधीशका मंदिर, यमुनाजी स्नान। श्रावण महीनेमें झूलोंका विशाल उत्सव तथा कार्तिकमें यमद्वितीयाका भारी मेला होता है। विश्रामघाट तथा अनेक घाटोंकी शोभा विचित्र है।

२ वृन्दावन—मथुरासे ६ मील उत्तरकी ओर। [मथुरासे रेल भी जाती है] यमुनाजीका स्नान तथा चैत्र वदी ९ को रंगजीका रथोत्सव। अक्षतीजको विहारीजीके चरणदर्शनका भारी मेला तथा श्रावणमें झूलोंका भारी मेला होता है। कालीदह आदि अनेक घाटोंकी शोभा विचित्र है।

गोकुल—मथुरासे ४ मील पूर्वकी ओर, तांगा मोटरका रास्ता श्रीकृष्ण जन्मभूमि, जन्माष्टमी और गोपाष्टमीका अपूर्व मेला, यमुनाजीका स्नान यहां घाटोंकी शोभा विचित्र है।

४ महावन—मथुरासे ६ मील पूर्वकी ओर, यमुनाजीका स्नान, ब्रह्माण्डघाट। यहा एक प्राचीन इमारत जिसमें ८४ खंभ लगे हुए हैं जो गिने नहीं जा सकते।

५ बल्देव—मथुरासे १० मील पूर्वकी ओर—श्रीदाऊजीकी विशाल (दाऊजी,) मूर्तिके दर्शन, भादोंमें देवछटका मेला तथा मार्गशीर्षकी पूर्णिमाको भारी मेला और चैत्र वदी २ को हुरगाका भारी मेला होता है।

६ मानसरोवर—मथुराके पास राया स्टेशन R. M. R. से ६ मील तथा वृन्दावनसे केशीघाट द्वारा ४ मील। प्रति पूर्णिमाको मेला तथा श्रीराधाजीका मंदिर।

७ गोवरधन—मथुरासे १२ मीलपर। श्री गिरीज पर्वत है, आषाढकी मूढ़ियापूनमका मेला, दीपमालिकोत्सव तथा गिरीज-की परिक्रमा लगती है।

८ राधाकुंड—गोवरधनसे १ मीलपर, यहा जलके २ कुंड हैं। कार्तिक वदी ८ को संतान-कामनार्थ रात्रिको स्नानका भारी मेला होता है।

९ नंदगाव—स्टेशन कोसीकला G. I. R. P. से १६ मील श्री-कृष्णजीका निवासस्थान है, पहाडीपर विशाल मंदिर है और चैतवदी ८ को होलीका मेला लगता है।

० बरसाना—नंदगावके पास श्रीराधाजीका जन्मस्थान है यहाका होलीका उत्सव भारी होता है।

उक्त स्थानोंके अतिरिक्त वृजमें कामवन, लोहवन, मधुवन, भद्र-

वन, निधिवन, कुबेरवन, कोकिलावन, बहुलावन आदि बहुतसे वन उपवन हैं, जो व्रजके चौरासी कोसकी परिक्रमाके मार्गमें पडते हैं। यह परिक्रमा आषाढसे शुरू होकर कार्तिकमें समाप्त होती है।

उत्तराखंडके तीर्थस्थान

१ गढ़मुक्तेश्वर—स्टेशन खास E I R कार्तिकस्नानका भारी मेला, शिवजीका प्रसिद्धस्थान, गंगाजीका किनारा।

२ हरद्वार—स्टेशन खास O R R गंगाजीका स्नान, हरिकी पैडी, बारह वर्षमें कुम्भका मेला।

३ ऋषिकेश—हरद्वारसे १२ मील। सडकका रास्ता व रेल्वेस्टेशन भी है। ऋषियोंकी तपोभूमि यहांपर बाबा काली कमलीवालेका क्षेत्र और धर्मशाला है, जिसका बंदोबस्त बदरीनाथके रास्तेमें भी है।

४ लछमनझूला—ऋषिकेशसे ७ मीलपर है। यहांसे बदरीनाथकी यात्रा शुरू होती है। लछमनझूला गंगाजी पार करनेके लिये एक साधारण लकडीका पुल है, जो कि गंगाजीके दोनों किनारोंहीके खंभोंके ऊपर स्थित है और इतना हलका है कि एक आदमीके ही चढकर चलनेमें डगमगाने लगता है।

५ बदरीनाथ—लक्ष्मनझूलासे १६४ मील है। यहांसे पैदल या झपान-कंडीमें बैठकर यात्री जाते हैं और इसी रास्तेमें

केदारनाथको रुद्रप्रयागसे जानेका रास्ता है। देवप्रयागसे गंगोत्री और जमुनोत्री जानेका रास्ता है और इसके मार्गमें कर्णप्रयाग, सोनप्रयाग, नन्दप्रयाग, गुप्तकाशी आदि तीर्थस्थान हैं। बद्रीनाथसे वापिस लौटकर काठ-गोदाम आते हैं। यहा रेलवेस्टेशन है।

६ मुक्तिनाथ—नैपालराज्य, स्टेशन भिकनाथोरी B. N. W. R. से उत्तरमें काठमाडू ४४ मील दूर, पैदल जानेका रास्ता है।

७ नैपाल—स्टेशन रकसौल B. N. W. R. जहासे ६२ मील काठमाडू है और काठमाडूसे नैपाल जाना होता है। शिव चतुर्दशीको पशुपतिनाथ महादेवके दर्शनका मेला होता है। मेलेके समय जानेपर राज्यके पास लेनेकी आवश्यकता नहीं होती। अन्यथा पास ही लेकर जाना होता है और यहापर वागमती नदी, गुजेश्वरी देवी, महेन्द्रनाथका मदिर, माली-फूजा मदिर, बौद्ध मंदिर, मुच्छन्द्रनाथका मदिर, लाल दरबार इत्यादि दर्शनीय स्थान हैं।

पूर्वप्रान्तके तीर्थस्थान

१ नैमिषारण्य—स्टेशन बघोली E. I. R. लखनऊसे गाड़ी जाती है यहापर सनकादिक ऋषियोंकी तपोभूमि है।

२ अयोध्याजी—स्टेशन खास E I R, लखनऊसे सीधी गाडी जाती है। यहापर सरयूका स्नान, रामचद्रजीकी जन्म-भूमि तथा रामनवमीका मेला।

३ बिठूर—कानपुरसे ३ मील दूरीपर शिवजीका मेला तथा जेठमे दशहराको गंगाजीका पर्व-स्नान।

४ चित्रकूट—स्टेशन खास G I P कानपुरसे झासी-मानिकपुर लाइनमें। यहापर चैत्रकी रामनवमी और कार्तिककी दिवालीपर भारी मेला होता है। कोटितीर्थ, देवागना, हनुमानधारा, स्फटिकशिला, अनुसूया, गुप्तगोदावरी, भरतकूप, राम शय्या, सीतारसोइया और तुलसीदासजीका स्थान आदि देखने योग्य है।

[illegible] स्टेशन B N R मानिकपुरसे कटनी होकर गाडी जाती है। स्टेशनसे १८ मील पहाडके ऊपर, पैदल रास्ता, नर्वदा नदीका निकास, नर्मदाजीका मदिर

केदारनाथको रुद्रप्रयागसे जानेका रास्ता है। देवप्रयागसे गंगोत्री और जमुनोत्री जानेका रास्ता है और इसके मार्गमे कर्णप्रयाग, सोनप्रयाग, नन्दप्रयाग, गुप्तकाशी आदि तीर्थस्थान हैं। बदरीनाथसे वापिस लौटकर काठ-गोदाम आते हैं। यहा रेलवेस्टेशन है।

६ मुक्तिनाथ—नैपालराज्य, स्टेशन भिकनाथोरी B N W. R. से उत्तरमें काठमाडू ४४ मील दूर, पैदल जानेका रास्ता है।

७ नैपाल—स्टेशन रक्सौल B N W R. जहासे ६२ मील काठमाडू है और काठमाडूसे नैपाल जाना होता है। शिव चतुर्दशीको पशुपतिनाथ महादेवके दर्शनका मेला होता है। मेलेके समय जानेपर राज्यके पास लेनेकी आवश्यकता नहीं होती। अन्यथा पास ही लेकर जाना होता है और यहापर वागमती नदी, पुजेश्वरी देवी, महेन्द्रनाथका मंदिर, भालीकुम्भा मंदिर, बौद्ध मंदिर, मुच्छन्द्रनाथका मंदिर, लाल दरबार इत्यादि दर्शनीय स्थान हैं।

पूर्वप्रान्तके तीर्थस्थान

१ नैमिषारण्य—स्टेशन बघोली E. I R. लखनऊसे गाड़ी जाती है यहापर सनकादिक ऋषियोंकी तपोभूमि है।

२ अयोध्याजी—स्टेशन खास E I R लखनऊसे सीधी गाड़ी जाती है। यहापर सरयूका स्नान, रामचन्द्रजीकी जन्म-भूमि तथा रामनवमीका मेला।

३ बिटूर—कानपुरसे ३ मील दूरीपर शिवजीका मेला तथा जेठमें दशहराको गंगाजीका पर्व-स्नान।

४ चित्रकूट—स्टेशन खास G I P कानपुरसे झांसी-मानिकपुर लाइनमें। यहापर चैत्रकी रामनवमी और कार्त्तिककी दिवालीपर भारी मेला होता है। कोटितीर्थ, देवागना, हनु-मानधारा, स्फटिकशिला, अनुसूया, गुप्तगोदावरी, भरतकूप, राम शय्या, सीतारसोइया और तुलसीदासजीका स्थान आदि देखने योग्य है।

५ अमरकटक—पेंडरारोड स्टेशन B N R मानिकपुरसे कटनी होकर गाडी जाती है। स्टेशनसे १४ मील पहाड़के ऊपर, पैदल रास्ता, नर्मदा नदीका निकास, नर्मदाजीका मदिर और रमणीक स्थान।

६ चौसठ योगनी भिहडा घाट—स्टेशन मीरगंज G I P कटनीसे जबलपुर होकर गाडी जाती है। यहापर गौरीशंकरके दर्शन, नर्मदा नदीका धु आधार व सहस्रधाराका दृश्य, कार्तिक पूर्णिमाका मेला।

७ प्रयाग—स्टेशन इलाहाबाद E I R जबलपुरसे सीधी गाडी जाती है। त्रिवेणीसगम, अक्षयवट, वेणीमाधवका स्थान, माघमे मेला, बारहवें वर्ष कुम्भ-स्नान।

८ विन्ध्याचल—स्टेशन खास E. I. R. इलाहाबाद—मुगलसराय लेनमें पड़ता है। विन्ध्यवासनीका स्थान, नवरात्रमें मेला।

९ काशी—स्टेशन बनारस E. I. R. मुगलसरायसे गाडी जाती है। श्रीविश्वनाथजी व अन्नपूर्णाका मन्दिर है। गंगाजीके किनारेपर अनेक रमणीक घाट तथा अन्य प्राचीन-अर्वाचीन स्थान देखने योग्य हैं। जैसे—माधोजीका धरहरा, हिन्दू-विश्व-विद्यालय आदि।

१० सारनाथ—काशीसे पाच मील है। यहीं बौद्ध-साहित्यका प्रसिद्ध मृगदाव है। गौतम बुद्धने बौद्ध-मतका प्रचार यहींसे शुरू किया था।

११ गौतमकुण्ड—स्टेशन कमतौल B. N. W. R. (दरभङ्गा) नरकटियागंज लाइन, गौतमऋषिका स्थान।

१२ जनकपुर—स्टेशन जनकपुर रोड B. N. W. R. दरभङ्गा। नरकटियागंज लाइन, रामनवमीका मेला, श्रीसीताजीकी जन्मभूमि।

१३ देवीपाटन—स्टेशन तुलसीपुर B. N. W. R. गोंडा, गोरखपुर, लूप लाइन। पटेश्वरी देवीका मन्दिर।

१४ हरिहर क्षेत्र—स्टेशन सोनपुर B. N. W. R. मुकामाघाट, मुजफ्फरपुर लाइन। हरिनाथ महादेवका मन्दिर, कार्तिक पूर्णिमाका मेला।

१५ धरमपुर—स्टेशन रघुनाथपुर E. I. R. मुगलसराय—हवड़ा लाइन, ब्रह्मेश्वरनाथ महादेव, शिवरात्रिका मेला।

१६ गया—स्टेशन खास E I R विष्णुपद मन्दिर, फल्गूनदी, अनेक कुण्ड इत्यादि प्रसिद्ध तीर्थस्थान।

१७ बौद्धगया—गयासे सात मील दूर निरञ्जना नदीके तटपर अवस्थित है। बौद्धगयामें प्राचीन मन्दिर है। यहींपर बुद्धदेवने सन्यास लिया था।

१८ पारसनाथ—स्टेशन ईसरी E I R, जैनियोंका तीर्थ-स्थान पहाडके ऊपर।

१९ राजगृह—स्टेशन राजगीरकुण्ड बख्त्यारपुर E I R स्टेशनसे छोटी लाइन जाती है। सरस्वती नदी, गर्म और ठंडे पानीके सोते, अन्य ५२ कुण्ड, लोंद माससें स्नानका पर्व। इसका पुराना नाम कुण्डिनपुर भी है।

२० वैद्यनाथधाम—स्टेशन खास E I R मेल लाइनमें जसिडी जङ्कशनसे गाडी बदलती है। यहापर शोवज्योतिर्लिंग है जो द्वादश ज्योतिर्लिङ्गोंमेंसे एक है।

२१ तारकेश्वर—स्टेशन खास E I R शिवडाफूली स्टेशनसे गाडी बदलती है और हवडा स्टेशनसे भी सीधी गाडी जाती है। महादेवजीका स्थान है।

२२ कलकत्ता—स्टेशन हावडा E I R का मुख्य स्टेशन है, जो हुगली नदीके एक किनारेपर है और दूसरे किनारेपर कलकत्ता शहर बसा हुआ है। यह शहर जन-संख्याकी दृष्टिसे भारतवर्षका पहला नम्बर और बृटिश राज्यका दूसरे नम्बरका शहर है। यह व्यापारका बडा केन्द्रस्थान है और जहाजोंका

यन्दरगाह भी है। यहापर बडी-बडी इमारते, चौडी-चौडी सडकें, बडे बाजार तथा अन्य अनेक वस्तुयें देखनेयोग्य हैं, जैसे कि कालीजी आदिका मन्दिर, चिडियाघर, अजायबघर, विक्टोरिया मेमोरियल, मल्लिककी कोठी, हौगमार्केट (अङ्गलीस बाजार) इत्यादि।

२३ गङ्गासागर—कलकत्तेसे जहाजद्वारा जाते हैं। यहापर प्रतिवर्ष मकरको संक्रान्तिपर स्नानका मेला होता है। कपिल-मुनिकी मूर्ति है, यहापर वर्षभरमे एक ही दफे दर्शन होते हैं।

२४ कामाक्षीदेवी—स्टेशन गोहाटी A. B. R.। कलकत्तेके स्यालदह स्टेशनसे गाडी जाती है। वहासे दो मील पहाडीके ऊपर कामाक्षी देवीका मन्दिर है, जिसमे अष्टधातुकी दश-भुजी मूर्ति विराजमान हैं।

२५ सीताकुण्ड—स्टेशन रास A. B. R कलकत्तेसे चटगाव होकर गाडी जाती है। यहापर ऊंची पहाडीके ऊपर चन्द्रनाथजीका मन्दिर है और अग्निकुण्डके दृश्य देखने योग्य हैं, जिनमें सदा आग निकलती रहती है। यहींपर महाराजा गौतमबुद्धकी अन्त्येष्टि क्रिया हुई थी।

२६ वैतरणी—स्टेशन वैतरणी रोड B. N. R कलकत्तेसे जगन्नाथ-जी जानेके रास्तेमें पडता है, यहापर वैतरणी नदीका मुख्य तीर्थ-स्थान है।

२७ भुवनेश्वर—स्टेशन खास B N R यहापर भुवनेश्वर महादेव-का विशाल मन्दिर तथा अनेको अनगिनत मन्दिर हैं।

२८ तप्तकुण्ड—स्टेशन खुर्दारोड B N R से ६ मील, मकर संक्रातिका मेला, कूपमे खौलता हुआ जल।

२९ साक्षीगोपाल—स्टेशन खास B N R जगन्नाथजीके दर्शन करनेके पश्चात् इनके ही दर्शन किये जाते हैं, इसलिये इनका नाम साक्षीगोपाल है।

३० जगन्नाथजी—स्टेशन पुरी B N R कलकत्तेसे सीधी गाडी जाती है, जगन्नाथस्वामीका विशाल मन्दिर है।

दक्षिण प्रांतीय तीर्थस्थान।

१ सेमाचलम्—स्टेशन खास B N R जगन्नाथजीसे रामेश्वरजी जानेके रास्तेमें पडता है। स्टेशनसे ३ मील पहाडके ऊपर नृसिहदेवका मन्दिर है।

२ गोदावरी—स्टेशन खास M S M R गोदावरी नदीका तीर्थ स्थान।

३ बालाजीतृप्ति—स्टेशन तिरूपति M S M R. गोदावरी, स्टेशनसे गुडूरतक बडी लाइन और गुडूरसे उतरकर छोटी लाइनसे तिरूपति जाना होता है, वहांसे सात मील पहाडके ऊपर विशाल मन्दिर है, जिसमे श्रीबालाजीकी अद्‌भुत 'अपूर्व' तेजोमय मूर्ति विराजमान है। यह पहाड नीलगिरिपर्वतकी

श्रेणीमें है और शेषाचलके नामसे पुकारा जाता है। यहां-पर अनेक तीर्थ स्थान और रमणीक व दर्शनीय स्थान हैं, जैसे—पापनाशिनी, आकाशगंगा, पाडुतीर्थ, चक्र तीर्थ, झापाली हनुमान, कुमारधारा आदि। क्वार दशहरापर ब्रह्मउत्सव व रथका भारी मेला होता है, तिरूपति खासमें भी गोविन्ददेवजी सीतारामजीके मन्दिर दर्शनीय हैं, यहा से डेढ़ मीलपर कपिलधारा कुण्ड है, जिसमे पहाडके ऊपर-से धारा गिरती है और यहापर कपिलेश्वर महादेव तथा कपिलमुनिका स्थान है। चैत रामनवमीको सीताराम-जीका रथ निकलता है। तिरूपतिसे तीन मील दूर चिन्तानूरमें श्रीपद्मावतीका मन्दिर है।

४ शिवकाञ्ची, विष्णुकाञ्ची—स्टेशन कञ्जीवरम् S. I R. तिरूपति-से रनीगुण्टापर गाडी वदलकर आरकोनमको गाडी जाती है। यहासे रामेश्वरके रास्तेमें कञ्जीवरम् स्टेशन पडता है, यहापर वडे-वडे मन्दिर हैं।

५ पक्षीतीर्थ—स्टेशन चिंगलपेठ S I R. यहासे ४ मील समुद्र-के किनारे पक्षियोंका जोडा आता है जिसका दर्शन किया जाता है।

६ चिदाम्बरम्—स्टेशन खास S I R शङ्करजीका मन्दिर।

७ श्रीरङ्गजी—स्टेशन श्रीरङ्गम् S I.R. चिदाम्बरम्से त्रिचनापली-पर गाडी वदलनी पड़ती है, यहापर कावेरी नदी और वैकुण्ठ का प्राचीन प्रसिद्ध और विशाल मन्दिर है।

८ मदूरा—स्टेशन मदूरा S. I R. श्री रङ्गमसे त्रिचनापलीपर गाडी बदलकर रामेश्वरके रास्तेमें मदूरा आना पड़ता है। यहापर मीनाक्षी देवीका ११ मंजिला मन्दिर प्रसिद्ध है।

९ रामेश्वर—स्टेशन रामेश्वरम् S I R. मदूरासे चलकर पामपन जंकशन स्टेशनपर गाड़ी बदलकर रामेश्वर जाना होता है, यहापर सेतुबन्ध रामेश्वरजी महादेवका विशाल मन्दिर है, जिसके अन्दर २४ अन्य तीर्थस्थान हैं।

१० धनुषकोटि—रामेश्वरसे पामपन जंकशनपर बदलकर यहा आना पडता है, यहा श्रीरामचन्द्रजीका प्राचीन मन्दिर है और यहापर ही मर्य्यादापुरषोत्तमने सेतु बाधा था।

११ मदरास—धनुषकोटिसे सीधी गाड़ी मदरासको जाती है। 'मदरास' दक्षिण प्रान्तका व्यापारिक केन्द्र तथा जहाजी बन्दरगाह है। यहापर समुद्रके किनारका दृश्य बडा ही रमणीक और देखने योग्य है, मच्छी हाउस, लाइट हाउस आदि अनेक स्थान भी देखने योग्य हैं।

१२ मल्लिकार्जुन—स्टेशन विनूकुडा M. S. M R मदरासले गुन्तिकल होकर आना होता है, ज्योतिर्लिङ्गका स्थान, जङ्गली रास्ता और शिवरात्रिका मेला।

१३ पन्नानृसिंह—स्टेशन मङ्गलगिरि M S M. R विनूकुण्डासे यानी मल्लिकार्जुनसे सीधी गाडी जाती है। स्टेशनसे कुछ दूरपर पहाड़के ऊपर नृसिंह भगवान्‌का मन्दिर है। यहापर गुडके शरबतका भोग लगता है। यहापर विशेषता

यह है कि चाहे लोटेमे चाहे घडेमें पूरा भरा हुआ शरबत ले जानेसे उसके आधेमें ठाकुरजीका मुख भर जाता है और इतना चिपकनास्थान होनेपर भी चिउँटा चिउँटी तथा मक्खियोंका नाम मात्र भी नहीं है।

१४ कार्त्तिकस्वामी—स्टेशन गदिगानूरु M S M. R. स्टेशन मंगलगिरिसे गुन्तोकल होकर आना होता है। स्टेशनसे १६ मील दूर श्रीकार्त्तिकस्वामीका मन्दिर है।

१५ किष्किन्धा—स्टेशन हौसपेटसे ९ मील M S. M. R कार्त्तिक स्वामीसे सीधी गाडी जाती है। यहापर बालि और सुग्रीवकी राजधानी थी। पम्पासरोवर व फटिक शिला है, जहा रामचन्द्रजीने लक्ष्मण सहित रहकर वर्षाऋतु व्यतीत की थी।

१६ पंढरपुर—स्टेशन B. L R हौसपेटसे गदग होकर सोळपुर बदलकर कुर्डूवाडी और कुर्डूवाडीमें उतरकर पण्ढरपुर सीधी गाडी जाती है। यहापर चन्द्रभागाका स्नान पन्ढरीनाथ (विठ्ठोवा) का मन्दिर, दक्षिण महाराष्ट्रका प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान है। यहापर असाढमें रथ और कार्तिक मासमें भारी यात्रा होती है।

१७ मनमाड़—स्टेशन G I P R. पण्ढरपुरसे कुर्डूवाडी बदलकर दौंड जङ्कशन आना पडता है, जहापर चन्द्रभागा नदीका स्नान तथा विट्ठलनाथका मन्दिर है। दौंडसे मनमाड सीधी गाड़ी जाती है। मनमाडसे ५ मील दूर पहाडके ऊपर

अगस्त मुनिका आश्रम है तथा कुन्ड और गुफायें हैं।

८ अजंटा—स्टेशन पाहुर G I. P. R. मनमाड़से पाचोरा जङ्क्शन स्टेशनपर गाडी बदलकर पाहुर छोटी लाइनमें जाना होता है। पाहुरसे अजण्ट ७ मील दूर है। यहा-पर अनेक प्राचीन गुफायें हैं, जो भारतीय शिलातक्षण और चित्रकलाके अपूर्व नमूने हैं। इन्हीं गुफाओंमें बुद्ध भगवानका मन्दिर भी है।

९ अलोरा—स्टेशन दौलताबाद N. G S R अजटासे लौटकर मनमाड आना होता है। मनमाड़से दौलताबादको सीधी गाडो जाती है। दौलताबाद स्टेशनसे अलोरा ७ मील दूर है। यहा पर भी बहुत सी विचित्र गुफाये हैं जिनमें बहुतसे हिन्दू और जैन तथा बौद्ध-मन्दिर हैं।

१० नासिक—स्टेशन खास G I P R. दौलताबादसे मनमाड आकरके मनमाडसे नासिकको सीधी गाड़ी जाती है। स्टेशनसे नासिक तीर्थस्थान ५ मील दूर है। यहापर गोदावरीका स्नान होता है जिसमें रामकुण्ड, सीताकुण्ड, आदि कई कुण्ड हैं। पञ्चवटी, तपोवन, पाण्डवगुफा, सीतागुफा तथा अनेक मन्दिर दर्शनीय हैं। बारह वर्षमें कुम्भका मेला होता है।

११ त्र्यम्बकेश्वर—नासिकसे १८ मील, पक्की सड़क, मोटर तथा तागा-का रास्ता है। यहापर त्र्यम्बकेश्वर महादेवका प्राचीन

मन्दिर पहाड़के ऊपर अवस्थित है। यहाँसे गोदावरी नदी निकलती है।

२७ पूना—स्टेशन खास G. I. P. R. नासिकसे कैल्यान गाड़ी बदलकर पूना जाना होता है तथा नासिकसे मोटर भी जाती है। यह महाराष्ट्र-प्रान्तका प्राचीन और सबसे बड़ा शहर है; जो पहले शिवाजीकी मशहूर राजधानी थी। यहासे ५० मील दूर, मोटरका रास्ता भीमाशङ्कर पहाड़ है। वहापर भीमाशङ्कर महादेवका विशाल मन्दिर है। तथा वहींसे चन्द्रभागा नदी निकली है। इसको भीमा नदी भी कहते हैं।

पश्चिमीय प्रान्तक तीर्थस्थान

१ महाबलेश्वर—पूनासे ९० मील मोटरका रास्ता है तथा बम्बईसे भी मोटर जाती है। वहापर महादेवजीका मन्दिर है फाल्गुन शिवरात्रिको मेला होता है। यहापर बम्बई धनी पुरुषोंके बड़े-बड़े आलीशान बङ्गले हैं तथा बम्बईके सरकारकी हवा खानेकी जगह है।

२ बम्बई—पूनासे रेलका रास्ता तथा महाबलेश्वरसे मोटरका रास्ता है। बम्बई भारतवर्षमें जनसंख्याकी दृष्टिसे दूसरे नम्बर तथा व्यापारकी दृष्टिसे पहले नम्बरका शहर है। वहापर अनेक मन्दिर तथा अन्य कितनी ही वस्तुयें देखनेयोग्य

हैं, जैसे—बम्बादेवी, बालकेश्वर, महालक्ष्मी, भोलेश्वर आदिक मन्दिर, कोफोर्डबाजार, मोतीबाजार, अजायबघर, पिंजड़ापोल, चौपाटी आदि।

३ द्वारका—काठियावाड़ प्रान्तमें जामनगर, द्वारका-रेल्वेका एक स्टेशन है। बम्बईमें बी० बी० एण्ड सी० रेल्वे द्वारा विरमगावतक बड़ी लाइनसे विरमगाससे बंडवान छोटी लाईनसे तथा बंडवानसे राजकोट और राजकोटसे सीधा द्वारका जाना होता है। बम्बईसे द्वारकाको जहाज भी जाता है। यह श्रीकृष्णचन्द्रजीकी रमणीक नगरी है, यहांपर बेरसीमाधव, शंकराचार्य, सत्यभामादेवी, लक्ष्मी-नारायण आदिके मन्दिर दर्शन करने योग्य हैं।

४ बेटद्वारका—द्वारकासे ७ कोस दूर है। 'रामम' तक बैलगाड़ी तथा आगे ४ मील नौकासे जाना होता है। यहां भेंटजी, रणछोर, मीराबाईका कृष्णमन्दिर, रुक्मणीदेवी इत्यादि देखने योग्य हैं।

५ सुदामापुरी—यह पुरी श्रीकृष्णचन्द्रके परम मित्र सुदामाजीके नामसे प्रसिद्ध है। पोरबन्दरसे १॥ मीलपर सुदामाजीका मन्दिर है।

६ गिरनार—स्टेशन जूनागढ—द्वारिकासे राजकोट और राजकोटसे जटलसर जंकशनपर बदलकर जूनागढ जाना होता है। यहांसे ७ मील दूर पहाड़के ऊपर गिरनारदेवी, निभाईनाथ गोरक्षनाथ आदिके मन्दिर दर्शनीय हैं। यह राजा बलिकी

राजधानी बतलाई जाती है। यहापर सम्राट अशोकका शिलपलेस अभीतक मौजूद है। यह स्थान जैनियोंका भी तीर्थस्थान है।

७ सोमनाथ—स्टेशन बेरावल जूनागढ़से गाडी सीधी जाती है। स्टेशनसे सोमनाथ करीब २ मील है। यहापर सोमनाथ महादेवका विशाल मन्दिर उसमे चमत्कार मूर्ति है। यहापर सरस्वती नदी है और दैत्यसुदन ,शशिभूषण-महादेव आदि स्थान देखने योग्य हैं।

८ डाकोरजी—स्टेशन बी० बी० एण्ड सी० आई० आर० बेरावल यानी सोमनाथसे राजकोट और राजकोटसे वढवान होकर विरमगावतक छोटी लाइन और विरमगावसे आनन्द स्टेशनपर बदलकर बडी लाइन द्वारा डाकोरजी जाते हैं। स्टेशनसे नगर १॥ मील है। यहापर रणछोरजीका मन्दिर प्रसिद्ध है।

९ पुष्कर—स्टेशन अजमेर B B C. I. R डाकोरजीसे चलकर आनन्दमें गाडी बदलकर अहमदाबाद और अहमदाबादसे छोटी लाइन सीधी अजमेर आती है, अजमेरसे ७ मील मोटर तागाका रास्ता है। पहाडके ऊपर पुष्कर तीर्थस्थान है। यहापर पुष्कर तालाब है। ब्रह्माजीका प्रधान मन्दिर है। यहापर कार्तिक सुदी ११ को मेला होता है।

१० अजमेर—पुष्करसे अजमेर यह राजपूतानेके मध्यभागमें बृटिश

राज्यका मुख्य शहर है। यह बहुत प्राचीन शहर है। यहां-पर अनासागर झील तथा ख्वाजाकी दरगाह प्रसिद्ध है।

११ चित्तौर—स्टेशन खास P M R. अजमेरसे सीधी गाडी आती है। यहापर मेवाड़राज्यका तथा राजपूतोंका नामी और प्राचीन किला देखनेयोग्य है। किला पहाड़ीके ऊपर है और उसमें बड़े २ सुन्दर अनेक तालाब हैं। गोपालकृष्ण तथा कालीमाईका मन्दिर है। पद्मावतीका महल है और यहा-पर कीर्तक तथा जयस्तम्भके दो नामी बुरज हैं।

१२ श्रीनाथ द्वारा—स्टेशन खास। यहा चित्तौरसे गाडी जाती है। स्टेशनसे १४ मील मोटरका रास्ता है। यहापर बनास नदीके किनार वल्लभ सम्प्रदायके वैष्णवोंका प्रधान तीर्थ-स्थान है। यहापर दिवालीके दूसर दिन अन्नकूटका भारी मेला होता है। यहापर ठाकुरजीके भोगका बडा जबरदस्त काम है। काकरोलीमें भी वल्लभ सम्प्रदायका विशाल मन्दिर है।

१३ इकलिंगजी—श्रीनाथद्वारासे मोटर या बैलगाडीका रास्ता है। यहापर चारमुखी महादेवका प्रसिद्ध मन्दिर है।

१४ केसरियाजी—इकलिंगजीसे उदयपुर होकर जाते हैं। यह जैनियोंका प्रसिद्ध तीर्थस्थान है।

१५ ओंकारनाथ—स्टेशन मोरटका R M R उदयपुरसे चित्तौर बदलकर गाडी सीधी आती है। यहासे ७ मील मोटर तथा बैलगाड़ीका रास्ता नर्मदा नदीके दाहिने किनारेपर ओंकार-नाथका प्राचीन प्रसिद्ध मन्दिर हैं। इसकी परिक्रमामें

तिलभांडेश्वर, ऋणमुक्तेश्वर, गौरी सोमनाथ आदि प्राचीन मन्दिर दर्शन करने योग्य हैं।

१६ इन्दौर—मौगटकासे इन्दौर गाड़ी सीधी जाती है। होल्करराज्य का मुख्य तथा नामी शहर और व्यापारका भी अच्छा स्थान है। यहांपर राजमहलोंके अलावा सेठ हुकुमचन्द की जैन मन्दिर, शीशमहल, इन्द्रभवन आदि स्थान देखने योग्य हैं।

१७ उज्जैन—इन्दौरसे उज्जैनको फतिहाबाद होकर गाडी जाती है। यह R. M. R. तथा G I P R का जङ्कशन स्टेशन है। यहांपर शिप्रा नदीका स्नान होता है। महाकालेश्वर महादेवका प्राचीन मन्दिर है। यहांपर कुम्भका मेला भी होता है। यहांपर महाकाल, केदारेश्वर, हर्षद्वीप आदिके मन्दिर और रुद्रसागर, गोवर्धन सागर, पुष्कर सागर आदि देखने योग्य हैं। ज्योतिषगृह जयसिंहजीका बनवाया हुआ तथा गोपीचन्द भरथरीकी गुफा देखने योग्य हैं। वीर विक्रमादित्यकी पुरानी राजधानी थी।

१८ दिल्ली—स्टेशन खास जी० आई० पी० बी० बी० एण्ड० सी० आई० एन० डब्ल्यू० ई० आई० आर० का जङ्कशन है। उज्जैनसे नागदा होकर सीधी दिल्ली गाडी आती है। यह प्राचीनकालसे भारतवर्षकी राजधानी होती चली आयी है और अभी बृटिश भारतकी राजधानी है। यहांपर बहुत-सी सुन्दर और प्राचीन जगह देखने लायक

हैं, जैसे—रानीबाग, चांदनीचौक, क्लौक टॉवर, जुमामसजिद, सफदरजंग (भूलभुलैया), मानमन्दिर, अलाउद्दीनका किला, फीरोजशाहकी लाठ, इन्द्रप्रस्थ, राजसूययज्ञभूमि (हस्तिनापुर), कुतुबमीनार (जमनास्तम्भ) आदि। यहांपर भी वेधशाला ज्योतिषगृह देखने योग्य हैं। अंगरेजोंने नई दिल्ली बनवाई है, वह भी देखने योग्य है। यह नगर यमुना नदीके किनारेपर बसा है। यह व्यापारका भी बड़ा केन्द्र स्थान है।

पंजाब प्रान्तीय तीर्थस्थान

१ कुरुक्षेत्र—स्टेशन खास अथवा थानेश्वर N W R देहलीसे नरवाना जंकशन बदलकर जाना होता है। यहांपर एक बड़ी झील है जिसके किनारेपर बहुतसे मन्दिर बने हुए हैं। यहांपर सूर्यग्रहणका भारी मेला होता है। यहांपर ३६० तीर्थस्थान हैं। शिवजीका मन्दिर द्वैपायनतीर्थ, पांचो पांडवोंकी मूर्तियां, भीष्मकी शरशय्या, अर्जुनकी बाणगंगा, सरस्वती इत्यादि दर्शन करने योग्य हैं।

२ ज्वालामुखी—स्टेशन होशियारपुर N W R, थानेश्वरसे नरवाना, नरवानासे फीरोजपुरकेण्ट, वहांसे जालंधर होकर होशियारपुर जाना होता है। यहांपर पहाड़के ऊपर ज्वालामुखी देवीका मन्दिर है। इस पहाड़मेंसे हमेशा आग निकलती रहती है।

३ अमृतसर—स्टेशन N. W. R. होशियापुरसे जालन्धर और जालन्धरसे सीधी गाड़ी जाती है। यहापर सिक्खोंका बड़ा गुरुद्वारा तथा स्वर्णमय मन्दिर है। यह तालाबके बीचमें बना हुआ है। यहापर ही जलियानवाला बाग है। दीवालीपर बड़ा मेला लगता है।

४ अमरनाथ—अमृतसरसे रावलपिंडी रेल्गाडी द्वारा जाते हैं। आगे श्रीनगरतक जो काश्मीरकी राजधानी है नाव या मोटरद्वारा जाते हैं, फिर वहासे पैदल पहाड़की चढ़ाई है। यह कैलासपर्वतहीकी श्रेणियोंके पास है। यहापर अमरनाथ महादेवका मन्दिर है।



रेलवेके नियम

१—तीन वर्षतकके बच्चेका महसूल माफ, उसके बाद बारह वर्ष तककी उम्रवाले बच्चेका आधा और बारह वर्षसे ऊपरका पूरा महसूल लगता है।

२—आने-जानेका वापिसी टिकट ६ महीने तकका मिलता है, इसका लेनेवाला यदि मियादके अन्दर लौट न सकता हो, तो आधी मियाद ही पर, जहांसे यह लौटनेवाला हो उस स्टेशनपर टिकट वापिस करे और स्टेशनमास्टरसे रसीद लेकर चीफ ट्रेफिक मैनेजरको लिखे, तो एक बारका पूरा महसूल लेकर बाकीमेंसे १० फी सदी काटकर उसे वापिस मिल सकेगा, कोई टिकट एक मुसाफिर दूसरेके हाथ नहीं बेच सकता।

३—पहिले दर्जेका मुसाफिर डेढ़ मन, दूसरे दर्जेका तीस सेर, ड्योढे दर्जेका बीस सेर और तीसरे दर्जेका पन्द्रह सेर बोझा अपने साथ ले जा सकता है। ओढने बिछानेके कपडे, खानेके सामान, हैण्डबेग, छाता व छडीकी तौल नहीं की जाती। आधी टिकटवाले बच्चेके लिये आधा बोझा माफ है। अधिक बोझा होनेसे लगेजके दरसे महसूल

देकर रसीद लेना होगा। पन्द्रह सेरसे ज्यादा बोझ ले जाने वाले तीसरे दर्जेके मुसाफिर यदि लगेज न करावेंगे, तो रास्तेमें टिकिट चेकर द्वारा चेक किये जानेपर पन्द्रह सेर बोझा माफ न करके उसका भी महसूल देना होगा। लगेजका बोझा गार्डके पास भी रखा जा सकता है, किन्तु उतरनेवाले स्टेशनपर मुसाफिर उसे ४० घंटेतक न छुड़ा ले तो हर्जाना फी बोझा दो आना रोज देना पडेगा।

४—सौ मीलसे अधिक सफर करनेवाले मुसाफिरको अधिकार है कि सौ मील सफरकर चुकनेके बाद प्रति सौ मील या उसके अंशपर एक दिन इस हिसाबसे एक या अधिक स्टेशनपर ठहरता हुआ देरसे पहुंचे यानी फी सौ मील सफर कर चुकनेके बाद चौबीस घण्टे उतरकर आराम कर सकता है, मगर स्टेशनपर उतरनेके बाद उस स्टेशनके स्टेशनमास्टरसे टिकिटपर सही करा लेनी चाहिये। जैसे कलकत्तेसे देहलीका नौ सौ मीलकी सफर है, तो फी मील चौबीस घण्टा ठहरता हुआ मुसाफिर नौ दिनमें कलकत्तेसे देहली उसी टिकिटसे पहुंच सकता है। बसे, चौबीस घण्टेकी सफर है।

स्त्रियोंके डिब्बेपर "स्त्रियोंके लिये" लिखा रहता है। इनमें बारह वर्षतकके बच्चे भी बैठ सकते हैं। किन्तु इनमें पुरुषके बैठनेका अधिकार नहीं है। इनमेंकी टिकट चलती गाड़ीमें जाचनेका पुरुषको अधिकार नहीं है।

६ कोई गाड़ी निश्चित समयसे पहिले नहीं छूट सकती, स्टेशन-मास्टरसे गाडी पहुंचते ही उस स्टेशनका नाम व गाड़ी कितनी देर ठहरेगी जोरसे कहलवाना चाहिये।

७ टिकट लेनेके बाद मुसाफिर गाड़ीमें न चढ़ सके, तो तीन घण्टेके अन्दर टिकटका दाम वापिस ले सकता है।

८ यदि जगह न रहनेसे किसीको कम दर्जेकी गाड़ीमें बैठना पड़े, तो बैठते वक्त गार्डसे कह देने और उससे सर्टिफिकट ले लेनेपर बाकी महसूल उस रलवेके हेड आफिसको लिखापढ़ी करनेसे वापिस मिल सकता है।

९ यदि कोई यात्री बिना गार्डको कहे या उससे बिना सार्टिफिकेट लिये हुए अपने टिकटसे ऊंचे दर्जेके डिब्बेमें बैठे या जहांका टिकट लिया हो उससे अधिक सफर करे तो उसे प्रचलित नियमानुसार अधिक महसूल व जुर्माना देना पड़ेगा। इसलिये गार्डसे कहकर बैठना चाहिये।

१०—यात्रीका सामान गाड़ीमें छूट जानेसे स्टेशनमास्टरको कहकर अगले स्टेशनपर तार भिजवाना चाहिये, लावारसी सामान स्टेशनपर दो दिन रखा जाकर उसके बाद बड़े स्टेशन-पर भेज दिया जाता है और फिर नीलाम कर दिया जाता है।

११—यदि यात्री विशेष कारणसे अपने सामानको अदद कुछ काल-तक स्टेशनमास्टरके पास रखना चाहे, तो प्रति अदद पहिले चौबीस घण्टे या अशका दो आने और उसके

बाद एक आना प्रति चौवीस घण्टे या अशके लिये देना पड़ेगा। स्टेशनमास्टरसे इसकी रसीद ले लेनी चाहिये।

१२—जक्शन स्टेशनपर किसी यात्रीको भूलसे किसी दूसरी गाड़ीमे न बैठने देना टिकट कलक्टरका काम है।

१३—जिस डिब्बेमे जितनी सख्या लिखी हो, उससे अधिक मुसा फिर बैठानेका रेलवेको अधिकार नहीं है।

१४—यदि कोई रेलवेकर्मचारी यात्रीसे असभ्य व्यवहार करे या यात्रीको पानी, रोशनी, सफाई, डिब्बेमें जगहका अभाव आदिसे तकलीफ उठानी पड़े तो रेलवेके स्टेशनमास्टरसे बोलना चाहिये। यदि वह उचित बन्दोबस्त न करे तो ट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्टके पास खबर करनी चाहिये।

१५—यात्री भूलसे जहातकका टिकट लिया हो, वहासे आगे चला जाय, किन्तु उस आगेके स्टेशनपर पहुचनेपर स्टेशनकी सरहदके बाहर गये बिना पहली ही गाड़ीसे लौटे तो उसे अधिक यात्राका किराया दण्ड न देकर सिर्फ वापिस जानका ही किराया देना होगा।

१६—यदि किसी सज्जनको स्टेशनपर आकर अपनी सवारी पहुंचाने या [illegible] उतारनेके लिये प्लेटफार्मपर जाना हो, तो [illegible] प्लेटफार्म टिकट खरीदकर जाना चाहिये।

[illegible] रेल ठहरानेकी जंजीर तब खींचनी [illegible] जब कि अपनी कोई कीमती चीज गलसे [illegible] या कोई खतरेकी शका हो। इसके विरुद्ध [illegible] रलवे एक्टके अनुसार ५०) जुर्माना देना पड़ेगा।

१८—मुसाफिरोंको अपना बोझा रलोंसे उतारने या चढ़ानका महसूल रलके कुलियोंको फी हल्के बोझेका एक आना और फी भारी बोझेका दो आने देना चाहिये। इससे ज्यादा मागनेपर स्टेशनमास्टरसे रिपोट कर देनी चाहिय।

१९—सीजन यानी वापिसी अथवा मियादी टिकटवालोंको प्लेटफार्म पर या गाडीमें किसी प्रकारकी खाने-पीनेकी या अन्य चीजें बेचनेका या गौशालाके लिये अथवा अन्न-दानादिका पैसा यात्रियोंसे वसूल करनेका हुक्म नहीं है। इसके विरुद्ध करनेपर रलवे ऐक्टके अनुसार टिकट जब्त हो जायगा।

२०—कोई मुसाफिर रलमें बिना टिकट सफर नहीं कर सकता। अगर बिना टिकट सफर करता हुआ पाया जायगा, तो उस वर्गानुसार टिकटका दाम व जुरमाना उस जगहसे जहासे गाडी शुरू होती हो अथवा उस जंकशनस्टेशनसे जहापर गाडी चेक की गई हो देना पडेगा।

रेलवे कर्मचारीके पूछनेपर उसको टिकट दिखा देना चाहिये और अपने मुकामके स्टेशनपर टिकटबाबूको [illegible]।

याद एक आना प्रति चौबीस घण्टे या अशके लिये देना पड़ेगा। स्टेशनमास्टरसे इसकी रसीद ले लेनी चाहिये।

१२—जक्शन स्टेशनपर किसी यात्रीको भूलसे किसी दूसरी गाडीमें न बैठने देना टिकट कलक्टरका काम है।

१३—जिस डिब्बेमें जितनी सख्या लिखी हो, उससे अधिक मुसाफिर बैठानेका रेलवेको अधिकार नहीं है।

१४—यदि कोई रेलवेकर्मचारी यात्रीसे असभ्य व्यवहार करे या यात्रीको पानी, रोशनी, सफाई, डिब्बेमे जगहका अभाव आदिसे तकलीफ उठानी पड़े तो रेलवेके स्टेशनमास्टरसे बोलना चाहिये। यदि वह उचित बन्दोबस्त न करे तो ट्राफिक सुपरिन्टेन्डेन्टके पास खबर करनी चाहिये।

१५—यात्री भूलसे जहातकका टिकट लिया हो, वहासे आगे चला जाय, किन्तु उस आगेके स्टेशनपर पहुचनेपर स्टेशनकी सरहदके बाहर गये बिना पहली ही गाडीसे लौटे तो उसे अधिक यात्राका किराया दण्ड न देकर सिर्फ वापिस जानेका ही किराया देना होगा।

१६—यदि किसी सज्जनको स्टेशनपर आकर अपनी सवारी पहुँचाने या गाडीमेंसे उतारनेके लिये प्लेटफार्मपर जाना हो, तो एक आनेका प्लेटफार्म टिकट खरीदकर जाना चाहिये।

१७—रेलमें बैठे हुए यात्रीको रेल ठहरानेकी जजीर तब खींचनी चाहिये जब कि अपनी कोई कीमती चीज रेलसे गिर पडी हो, या कोई खतरेकी शका हो। इसके विरुद्ध खींचनेसे रेल्वे एक्टके अनुसार ५०) जुर्माना देना पडेगा।

१८—मुसाफिरोंको अपना बोझा रलमेंसे उतारने या चढ़ानेका महसूल रलके कुलियोंको फी हल्के वाझेका एक आना और फी भारी बोझेका दो आने देना चाहिये। इससे ज्यादा मांगनेपर स्टेशनमास्टरसे रिपोर्ट कर देनी चाहिये।

१९—सीजन यानी वापिसी अथवा मियादी टिकटवालोंको प्लेटफार्मपर या गाड़ीमें किसी प्रकारकी खाने-पीनेकी या अन्य चीजें बचनेका या गौशालाके लिये अथवा अन्य-दानादिका पैसा यात्रियोंसे वसूल करनेका हुकुम नहीं है। इसके विरुद्ध करनेपर रल्वे ऐक्टके अनुसार टिकट जब्त हो जायगा।

२०—कोई मुसाफिर रल्वे बिना टिकट सफर नहीं कर सकता। अगर बिना टिकट सफर करता हुआ पाया जायगा, तो उस वर्गानुसार टिकटका दाम व जुरमाना उस जगहसे जहांसे गाडी शुरू होती हो अथवा उस जंकशनस्टेशनसे जहांपर गाडी चेक की गई हो देना पड़ेगा।

२१—उचित रल्वे कर्मचारीके पूछनेपर उसको टिकट दिखा देना चाहिये और अपने मुकामके स्टेशनपर टिकटबाबूको टिकट देकर जाना चाहिये।

२२—अगर कोई मुसाफिर उस रास्तेको छोडकर जिसका कि उसने टिकट लिया हो, दूसरे रास्तेसे जाना चाहे और वह रास्ता बड़ा हो तो उसको उतनी ज्यादा रास्तेके वास्ते अलग महसूल देना पडेगा। अगर वह रास्ता छोटा और जल्दी

पहुंचनेवाला हो, तो उसी टिकटसे बिना दूसरा महसूल दिये जा सकता है।

२३—मेल गाडीका टिकट लिये हुए इन्टर और थर्ड क्लासके मुसाफिरोंको किसी कारणसे पैसेन्जर गाडीमें सफर करना पड़े, तो गार्डका सार्टीफिकेट लेकर उच्च अधिकारियोंको लिखनेपर उनको मेल ओर पैसिंजर गाडीके महसूलके फरकका पैसा वापिस मिल जायगा।

२४—फस्ट और सेकण्ड क्लास पैसिंजरको जहांपर उतरना है, उस जगहके लिये गार्डको सूचना देनेसे जगानेका गार्डका काम है। अगर कदाचित इसमें गल्ती हो जाय तो गलै जवाबदार नहीं है।

२५—अगर कोई मुसाफिर ऐसे अछूत रोगसे पीड़ित हो जिससे दूसर पासवाले मुसाफिरोंको रोग लग जानेका भय हो और वह और उसका साथी बिना स्टेशन मास्टरकी खास इजाजतके सफर करते हो तो उनको गाडीमेंसे किसी भी स्टेशनपर उतारा जा सकता है। उनका टिकट व पास जप्त किया जा सकता है और २०) तक जुरमानेकी सजा हो सकती है। ऐसा रोगपीडित मुसाफिर डिब्बा रिजर्व करा कर जा सकता है।

२६—अगर कोई मुसाफिर अपने किसी भी पडोसी मुसाफिरकी मरजी बिना सिगरट-तम्बाकू आदि पीता हो उसको २०)

तक जुरमानेकी सजा हो सकती है और गाडीसे उतारा जा सकता है।

२७—अगर कोई मुसाफिर नशेकी हालतमें कोई घृणित काम करे, अश्लील भाषा बोले, रोशनी बन्द करे या दूसरे मुसाफिरोंको किसी प्रकारकी बाधा डाले तो उसको ५०) तक जुरमानेकी सजा, टिकट व पास जब्त और गाडीसे उतारा जा सकता है।

२८—अगर कोई मुसाफिर किसी रेलवे-कर्मचारीकी ड्यूटी (कर्तव्य) में जानकर बाधा डाले, तो उसको १००) तक जुरमानेकी सजा हो सकती है।

२९—अगर कोई मुसाफिर उस डिब्बेमेंसे उतरनेसे इन्कार करे जो रिजर्व किया हुआ हो या जिसमें तादादके मुताबिक काफी मुसाफिर बैठे हो या उस डिब्बेमें दूसर मुसाफिरोंको आनेसे रोके जो न रिजर्व किया हुआ हो और न जिसमें काफी तादादमें मुसाफिर बैठे हो, ऐसा करनेवालेको २०) तक जुर्मानेकी सजा हो सकती है।

३०—रलवे किसो मुसाफिरके लगेज व मालकी टूट-फूट या नुकसानीकी जिम्मेदार नहीं है जबतक रलवे-कर्मचारियोंने उस मालकी रसीद न दी हो और वह लगेज रेलवेके ताबमें न दिया हो।

३१—रलद्वारा दो प्रकारसे माल भेजा जाता है (१) पार्सल (सवारी गाडीसे) जिसका महसूल ज्यादा लगता है,

और सबसे पहलेकी गाड़ीमें भेजा जाता है। यह पानेवाले-को शीघ्र मिलता है। (२) गुड्स (मालगाडीसे) जिसमें प्रत्येक वस्तुपर अलग अलग महसूल लगती है। यह मालगाडीसे जाता है व देरसे पहुँचता है। गुड्सका महसूल पर्सलसे कम लगता है।

३२—पासल या गुड्सका महसूल भेजनेवाला चाहे तो पहले दे सकता है और पीछे भी। परन्तु शीघ्र बिगडनेवाली वस्तुओंका महसूल पहले ही दिया जाता है। रेलद्वारा जो बिल्टी मिलती है उसमें भेजने व पानेवालेका नाम, मालका वजन, महसूल और महसूल पाने या न पानेका ब्यौरा लिखा होता है। बिल्टी लानेवाला ही वस्तु छुड़ा सकता है। बिल्टी खो जाय तो ।।) के स्टाम्पकागजपर इकरारनामा छुडानेवालेको लिखना पड़ेगा।

३३ किसी प्रकारका ज्यादा दिया हुआ महसूल वापिस लेना हो तो महीने दिनके अन्दर ट्रैफिक मैनेजर और एजण्टको लिखना चाहिये। टिकट व लगेजमें अधिक महसूल लिया गया हो, तो तुरन्त स्टेशनमास्टरको कहना चाहिये।

३४ लगेज, पार्सल या गुड्सकी वस्तु यदि गुम हो जाय, नुकसान हो जाय या किसी दूसरेको गलतीसे दे दी जाय, तो माल रवानगीकी तारीखसे एक महीनेके अन्दर उन रेल्वेके उचित अधिकारियोंको जाब्तेसे नोटिस देनी चाहिये, जिस रेल्वेसे वह माल रवाना हुआ हो और जिस रेल्वेमें पहुँचनेवाला हो।

३५ स्मोज, पार्सल या गुड्समें सोना, चान्दी, रेजकारी, रशमी, जरदोजी या ऊनी कपडा दुशाला, मोती, जवाहरात, घड़ी, चित्र या नक्शे आदि कीमती माल हो तो वह साफ रसीदपर लिखवाना चाहिये। उसका महसूल अधिक देना होगा। यह सामान रेलवेसे बीमा कराकर आयगा।



यात्रियोंके प्रति रेलवेकर्मचारियोंका कर्तव्य (Duty)



नोट—यहापर कुछ शब्द रेलवेकी पालिसी अर्थात् नीतिके विषयमें लिख देना अनावश्यक न होगा कि रेलवेका कितना उच्च उद्देश है और यात्रियोंके प्रति कितना आदरभाव है, जो पाठकोंको उनके बनाये हुए नीचेके नियमोंसे विदित हो जायगा। यदि यात्रियोंको रेलवेयात्राद्वारा किसी प्रकारका कष्ट पहुंचता है, तो वास्तविक इसमें रेलवेका कुछ दोष नहीं है। यह केवल उसके कर्मचारियोंकी धृष्टता है, जो अपने कर्तव्योंका पालन भली प्रकार नहीं करते हैं, जिनके कारण यात्रियोंको कष्ट होता है और रेलवेका नाम बदनाम होता है।

रेलवेकर्मचारियोंका बर्ताव

नम्रता व सभ्यता

(१) नम्रता व सभ्यतासे हानिकी अपेक्षा लाभ कई गुना है। इससे सब नाम कार्य्य की वृद्धि होती है और बडी-से-बडी भूलें भी इसके प्रयोगसे लुप्त-सी हो जाती हैं अर्थात होती हुई भी दिखा नहीं देती हैं। वास्तविक अथ इस शब्दका दूसरेके

हृदयपर अपने भावों और कर्मों द्वारा अपना प्रभाव जमाना और दोषोंका लोप करना है।

बिना इसके या जरासी कमीके ही कारण सेवामे भयकर भूलें जान पडती हैं और दूसरी करी-कराई सेवाओपर पानी फिर जाता है। जैसे रेलवेमे चाहे कितने ही अच्छे-अच्छे इजिन हो कितनी ही अधिक गाडिया हो, कितना ही बैठनेका सुपास हो और दूसरी अनेक सुविधायें हो किन्तु यह सब रलवेकर्मचारियोंकी सभ्यता बिना फीका जान पडता है। यह व्यवसायकी स्वाभाविक सहायक है, इसके ही कारण ट्रैफिक यानी व्यवसायकी वृद्धि होती है।

व्यवसायमें सफलता नम्रता या सभ्यताका ही फल है। यात्रियोंकी प्रसन्नता ही रेलवेका सबसे भारी विज्ञापन और अभेद कवच है, जिसकी ओर सब कर्मचारियोंका पूर्ण लक्ष होना चाहिये। रेलवेको नम्रता या सभ्यतामे पूर्ण विश्वास है और वह अपने प्रत्येक कर्मचारीको बाध्य करती है कि वह नम्रता या सभ्यताका व्यक्तिगत रूपसे रेलवेकी प्रतिष्ठा बढानेके लिये पूर्ण उपयोग करे।

२—रेलवे कर्मचारियोंका बर्ताव यात्रियोंके प्रति दृढता नम्रता सभ्यतापूर्ण होना चाहिये।

३—प्रत्येक रलवेकर्मचारीको यात्रियोंको हर प्रकारकी सुविधा हर समय देनेके लिये तैयार रहना चाहिये और उनको ठीक-ठीक सूचना देनेका ध्यान रखना चाहिये।

स्टेशनमास्टरका कर्तव्य (Duty)

स्टेशन मास्टरकाकर्तव्य है

१—कि उसके स्टेशनके कर्मचारी जनता और यात्रियोंके प्र
बिना उनके वर्गकी उपेक्षा किये नम्रता व सभ्यताका बर्त
करते हैं।

२—कि उसके स्टेशनका हरएक कर्मचारी अपनी ड्यूटी व गा
के आने और छूटनेके समयसे परिचित हैं, जिससे जन
को समयपर ठीक सूचना दे सकें।

३—कि उसके कर्मचारी जनता व यात्रियोंकी मदद चाहनेके इशारे
तत्काल ध्यान देते हैं।

४—कि उसके स्टेशनपर आनेवाली गाड़ीके हर डिब्बेके सामने स्टे
शनका नाम व गाड़ीके ठहरनेका समय शुद्ध और स्प
भाषामें पुकारा जाता है।

५—कि पीनेके स्वच्छ और ठंढे पानीका भिश्ती और कहारद्व
स्टेशनपर पूरा-पूरा बन्दोबस्त है।

६—कि यात्री रेलकी लाइन पुलद्वारा पार करते हैं।

७—कि प्लेटफार्म और मुसाफिरखानेमें बिना अन्धेरी या उजे
रातका ध्यान किये सब बत्तियां जलाई जाती हैं।

८ कि रिफ्रेशमेन्टरूम (होटल) में पहिले और दूसरे वर्गके यात्रिय
को उनकी गाड़ीके छूटनेका समय और यह कि गा
उक्त समयके बाद उनके लिये नहीं ठहरेगी, बताया जा
है।

गार्डकी ड्यूटी [कर्तव्य]

१—गाडीमे इ जिन लगनेके बाद गार्ड उस गाड़ीका रास्तेभर जवाबदेह रहेगा।

२—गार्डका कर्तव्य है कि गाडी छूटनेसे पहिले देखले कि गाडीके डिब्बोंमे सब सामान दुरुस्त और साफ हैं, टाकियोंमे पानी भरा हुआ है, बत्ती और पखेका गैस या बिजलीका फिटिंग बराबर है और रातमे बत्तिया बराबर जलती हैं।

३—गार्डका कर्तव्य है कि मुसाफिरोंको गाडीपर चढने और उतरनेमें नम्रता व सभ्यतापूर्वक मदद दे और गाडीके डिब्बोंमें भीड होनेसे रोके अर्थात् डिब्बोंमे बैठनेकी नियमित संख्यासे अधिक न बैठने दे। यदि गाडी पूरी भर जाय तो स्टेशनमास्टरको इत्तला कर देवे जिससे वह आगेके स्टेशनोंको तार या कट्रोल्र द्वारा सूचना कर दे कि टिकट बाटना बद किया जाय।

४—सब वर्गो के मुसाफिरोंकी जरूरतकी तरफ ध्यान देना गार्डकी ड्यूटीका मुख्य अ ग ।

५—किसी भी यात्रीके पहिली और दूसरी श्रेणीका भोजन चाहनेपर किसी मुख्य स्टेशनपर जहा यात्री चाहे

और जहांपर आहारगृह हो रेलवे तार द्वारा बंदोवस्त करना गार्डका काम है ।

६—जनानी डिब्बेमें किसी मर्दको न बैठने देनेका काम गार्डका है ।

७—दिनमें बोगदाओंमेंसे गाड़ी निकलते समय सब डिब्बोंमें बत्ती जला देनेका काम गार्डका है ।



शरीर-रक्षाके साधन

१—जंगलकी ताजी हवा लाभकारी होती है इसलिये नित्य मैदानमें कम-से-कम एक मील टहलना चाहिये। सदैव खुली साफ हवामें रहना चाहिये। नींदमें भी मुंहसे श्वास न लेना चाहिये। सोते समय नाकपर वस्त्र आदि न रखना चाहिये।

२—जिस कुए या तालाबमें मोरी मिली हो, पेड़की पत्तियां गिरती हों, जल खराब हो उसमेंका पानी न पीना चाहिये। बहते दर्याव या पक्के कुए का पानी उत्तम है। पानी छानकर पीना लाभकारी है। मल-मूत्र त्यागनेके बाद तुरत जल कभी न पीये।

३—भूख न रहते खाना या वृथा भूखा रहना हानिकारक है। भोजनमें जल्दबाजी न कर, खूब चबा चबा कर भोजन करे और अन्तमें थोड़ा जल पीये। भोजनके पश्चात् तुरत पेशाब करनेसे मसाने या बवासीरका रोग नहीं होता। भोजन हलका करना चाहिये। मक्खी आदिको भोजन पर न बैठने दे। भोजन नियत समयपर दोपहरमें करना चाहिये। दूध दही खाना योग्य है, किन्तु उसके ऊपर —

कदापि न पीये। चूल्हेपरके अत्यन्त गर्म पदार्थ न खाने चाहिये।

४—निद्रा नित्य ७ घंटे आवश्यक है। रात्रिमें ९ बजे सोना और सुबह ४ बजे जागना चित्तको प्रसन्न रखता है। बच्चोंको गाढ़ी नींदसे कभी न जगाना चाहिये।

५—वस्त्र सदैव समयानुकूल होना चाहिये। गर्मीमें आया हुआ पसीना पोंछकर तन हवामें निकल सकते हैं। चलती लूके दिनोंमें मोटा खद्दर पहनकर रहना लाभदायक है।

६ कसरत—मुगदर उठाना, दण्ड करना, गेंद खेलना इत्यादि शरीरको पुष्ट करता है। इसलिये कसरत करना आवश्यक है, लेकिन समय और परिमाणमें करना चाहिये।

७—पढ़ना, सोचना और दिमागी मिहनत आयु व दिमागी शक्तिके अनुसार करे। बच्चोंको जबतक ताकत अच्छी तरह न आवे पढ़नेमें न लगावे। महीन अक्षर पढ़ना और तेज रोशनी देखना नेत्रकी ज्योतिको खराब करता है।

८—स्नान प्रतिदिन आवश्यक है। गुनगुने या ठंढे जलसे जैसा अभ्यास हो करे, किन्तु गर्म पानीके स्नानपर हवा न लगने देना चाहिये। सर्वदा साफ नदीमें या कुंएके ताजा पानीसे नहाना बेहतर है। विदेशमें तेल मलकर नहाना चाहिये।

९—सुबह और शाम पाखाने जानेकी आदत रखनी चाहिये

मगर शौच क्रिया एकान्त स्थानमें करे। मल-मूत्र, भूख प्यास और नींद रोकना नहीं चाहिये।

१०—रहनेका स्थान साफ हो। सप्ताहमे दो बार लीपे और सुबह-शाम घरकी खिड़कियां शुद्ध वायुके लिये खोल रखनी चाहिये।

११—किसी प्रकारका नशा न कर, अधिक जल पीने, भोजन और सोनेके अनियम, ईर्ष्या, चिन्ता, भय, क्रोध, और शोक आदिसे अजीर्ण होता हैं, जो सब रोगोंका मूल है।

१२—मनुष्य स्त्रीप्रसंग नियमित करे, ज्यादा होनेसे शक्ति क्षीण होती है।

१३—प्रकृतिको सदा शांत रखना चाहिये, अधिक क्रोध शरीरको दुर्बल रखता तथा हिंसा व पाप कराता है।

१४—सुर्ती, अफीम, शराब या भांग आरम्भमें मनके लुभाने-वाले मालूम होनेपर भी परिणाममे हानिकारक हैं। इनका सेवन करनेवाला अपनी शरीरक्रिया विगाड लेता है और फिर उसके इतना अधीन हो जाता है कि नुकसान देखते हुए भी उनसे छुटकारा नहीं पा सकता।

१५—निर्व्यसनी मनुष्य बीमार नहीं पड़ता। यदि कभी बीमार हुआ तो थोड़ी-सी दवासे आराम होता है, किन्तु व्य-सनाधीन मनुष्य प्राय बीमार ही रहता है और कोई दवा जल्दी गुण नहीं कर सकती।

१६—मिताचारी रहने, उचित रीतिसे सारे शरीरको व्यायाम देने व नियमित विश्राम लेनेवाला मनुष्य सदा नीरोग तथा दीर्घजीवी, उत्साही व सततियुक्त रहता है।

१७—खासी रोकनेसे अरुचि, हृदयरोग, हिचकी आदिकी वृद्धि होती है।

१८—मुत रोकनेसे पथरी, पिल्ही, वायुगोला इत्यादि रोग हो जाते हैं।

१९—श्रमका श्वास रोकनेसे वायुगोला, हृदयरोग, मोह, प्रमेह आदि रोग हो जाते हैं।

२०—भूख रोकनेसे सन्न अगमें दर्द, अरुचि, ग्लानि, तथा शरीर क्षय होता है।

२१—अनियमित आहार-विहारसे रोग होता है।

२२—छींक रोकनेसे मृगी अपस्मारादि रोग उत्पन्न होनेका भय रहता है।



अकस्मात् उत्पन्न होनेवाले साधारण रोगोंको दूरकरनेवाले

अनुभूत प्रयोग

ऊपर शरीररक्षाके साधन लिखनेके बाद अब हम पाठकोंके लाभार्थ स्वय अनुभवमें आये हुए चन्द रोगोंके नुस्खे नीचे लिखते हैं। क्योंकि कोई भी मनुष्य कितनी भी सावधानीसे क्यों न रहे, परन्तु फिर भी कुछ-न-कुछ और कभी-न-कभी रोग शरीरमें अपना घर कर ही लेता है। इसलिये उस यमरूपी रोगको शरीररूपी घरसे निकालनेके लिये कुछ उपाय अवश्य होने चाहिये। यों तो हजारों किस्मके रोग और उनके नुस्खे भी हजारों ही होते हैं, मगर हमने यहा सिर्फ जरूरी और अकस्मात् हो उठनेवाले रोगोंके ही प्रयोगोका हवाला देना उचित समझा है। क्योंकि हम कोई वैद्य या डाक्टर नहीं हैं और यदि कुल रोगोंके प्रयोग इस पुस्तकमे लिखे जाय, तब तो यह पुस्तक वैद्यकका एक भारी पोथा बन जायगी। इसलिये हमने इन चन्द जरूरी नुस्खोंको ही इतनी सरल भाषामे और नियमसे लिखा है कि जिससे रोगीको दवा बनाने वा सेवन करनेमे किसी प्रकारकी कठिनाई न मालूम हो। साथ ही यह भी निवेदन कर देना उचित समझते हैं कि प्रत्येक यात्रीको अपनी आवश्यकता अनुसार नीचे लिखे नुस्खे बनाकर अपने पास सफरमे अवश्य रखने चाहिये, ताकि उनको फौरन फायदा उठानेमे विलम्ब न हो।

शिर-दर्दनाशक प्रयोग

१—यदि किसीके सिरमें गर्मीसे दर्द होता हो, तो चन्दन और कपूर खूब महीन घिसकर लगानेसे फौरन फायदा होगा।

२—यदि किसीके शिरमें सर्दी या जुकामके कारण दर्द होता हो, तो जरा-सा जायफल कच्चे दूधमें घिसकर लगाइये।

३—बच और पीपल महीन पीस-छानकर सुंघनेसे आधाशीशी और सिर-दर्द आराम होता है।

कानके रोग

१—अगर कानमें कीडा घुस जाय तो मकोयके पत्तेका रस कानमें टपकाओ।

२—कानके दर्दपर हुक्केका पानी और कौडीकी राख मिलाकर कानमें डालना।

३—कानके बहनेपर नीमकी पत्तीके रसमें शहद मिलाकर डालना।

४—कानदर्दपर सुदर्शनके पत्तेका रस गर्मकर कानमे डालना।

५—कानमेंसे आवाज निकलती हो तो कपूरका पानी डालना।

६—अगर कानमें पानी भर जाय तो छींकने और खासनेसे पानी निकल आयगा।

नेत्ररोग

१—गुलाब जलमें गुलाबी फिटकरी मिलाकर दिनमे दो-तीन बार दुखती आखोंमे डाल देनेसे गर्मी, सर्दी, बच्चे, बूढ़े, ज्वान, स्त्री, पुरुष सबकी आखें अच्छी हो जायगी।

२—शहदमे केसर घोटकर आखमे आजनेसे आखकी फूली कट जाती है तथा ज्वाला, धुन्ध, परवाल, दु खना आदि नेत्ररोग दूर होते हैं ।

३—रातको सोते समय गर्मीकी आखपर मलाईके फाये और सर्दीकी आखपर तेल या गुडके फाये बाधनेसे आखकी सुर्खी, दु खना तथा फकराना बन्द हो जाता है ।

ज्वरनाशक प्रयोग

१—तुलसीपत्रका रस १ तोला कालो मिर्चका चूर्ण ३ माशे मिलाकर गर्मकर सेवन करनेसे हर प्रकारके ज्वर दूर होते हैं । मगर खानपानमें परहेज तथा पेट हलका रखना चाहिये ।

२—दो तोले नीमकी छालके काढेमे धनिया, और सोंठ तीन-तीन माशे पीसकर लगातार तीन-चार बारी पोनेसे शीतज्वर बहुत जल्द आराम हो जाता है ।

३—तिजारी बुखार आनेवालोंको कुनैन, बुखार आनेसे चार घण्टे पहिले दो बार दो-दो घटेके फेरसे खाकर ऊपरसे दूध पी लेना चाहिये और कुछ न खाय । इस तरह दो-तीन रोज कुनैन खानेसे तिजारीज्वर चला जायगा ।

४—एक वर्षसे ऊपरके पुराने घीमें हींग घोटकर सु घनेसे चौथइयाज्वर जडसे उड जाता है ।

अतिसार नाशक औषधियां

१—यदि किसीके ज्यादा दस्त होनेके कारण आव जाता हो और

पेटमें मरोड़े चलते हों, तो लाल चूरा और राल पीस मिलाकर रातको सोते समय दो-दो घण्टके आगे पीछे दो-तीन फकी लेकर ऊपरसे गुनगुना पानी पी जाओ फौरन आराम होगा।

२—दहीमें ईसबगोल मिलाकर खानेसे भी दस्त बंद हो जाते हैं।

३—बेलका मुरब्बा खाना भी दस्त बन्द करनेमें लाभप्रद है।

दन्तरोगनाशक चुटकले

गर्म जल मुखमें रखनेमें यदि दांतोंका दर्द कम हो जाय, तो दर्द सर्दीसे है और ठंढा जल मुखमें रखनेसे दांतका दर्द कम हो जाय तो दांतोंमें दर्द गर्मीसे समझना चाहिये।

१—दांत व डाढके तले कपूर रखनेसे दांतका दर्द आराम होता और कीड़े मर जाते हैं।

२—अगर सर्दीसे दांतोंमें दर्द हो, तो अदरखपर नमक लगाकर दांतों-के नीचे रखे।

३—मसूड़े फूल जानेपर गर्म जलमें सफेद फिटकरी डालकर कुल्ला करना चाहिये या गर्म रोटीका टुकड़ा फूले हुए मसूड़ेके नीचे दबाकर खानेसे भी फायदा होगा।

४—पीपर, जीरा और सेन्धानोन पीसकर दांतोंमें मलनेसे दांतका दर्द, और उनका हिलना तथा मसूड़ोंका फूलना आराम होता है।

खांसीकी दवायें

१—अनारका छिलका मुंहमें रखना (२) बहेड़ेका

नीमकके साथ मुहमें डालकर उसका रस चूसो (३) मुलहठी-का सत्त मुहमें रखना या बहेड़ा और मिश्री मुहमें रखना।

पसलीका दर्द

अगर किसीको पसलीमें दर्द हो, तो जरा-सा सिन्दूरमें शहद मिलाकर एक साफ कपड़ेपर लगा लो। पीछे उसे दर्द होनेकी जगहपर चिपका दो और सुलगते हुए कंडोंकी आगसे सेक दो, मगर आगको शरीरसे अलग रखना चाहिये ताकि बदन जल जानेका डर न रहे।

अजीर्णनाशक बटी और चूर्ण

१—हर्र, बहेरा, आमला, काला नमक, सनाय, मकई इन सबको बरा-बर-बराबर लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लो। पीछे पत्थरके खरलमें नीबूके रसमें २४ घण्टेतक घोटकर २-३ माशेकी गोलिया बना लो। जब दस्त कब्ज हो या भूख कमती लगती हो, तब एक-एक या दो-दो गोली खाकर, आध पाव गर्म जल पी लो। इससे दस्त साफ होकर भूख खुल जायगी। जबतक दस्त साफ न हो और भूख न खुले तबतक २-४ दिन सेवन न करो, मगर हमेशा खाना ठीक नहीं।

२—सूखे कटारे, असलवेत चीता, हर्ड, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, सेन्धा नोन, काला नोन, मनिहारी नोन, वायविडंग, स्याह जीरा, सफेद जीरा, अजमोद और अजवायन इन सबको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस छानकर चूर्ण बना लो, इसकी मात्रा १ माशेसे ४

नाशक है। इसे फाककर थोडा ताजा या गर्म जल पीना चाहिये। भोजन करनेके बाद दोनों वक्त खानेसे भोजन भली भांति पच जाता है और भूख खुलकर लगती है। अगर यह चूर्ण अजीर्णमें खाया जाय, तो पत्थर समान अजीर्णको भी भस्म कर देता है।

३—शुद्ध गंधक, सोंठ, काली मिर्च, सेंधा नोन, इन्द्रजौ, वायविडंग इनको बराबर-बराबर लेकर कूट पीस छानकर नीबूके रसमें मिला कर चना बराबर गोली बनाकर खानेसे अग्नि प्रदीप्त होती है और अजीर्ण दूर होता है।

आगसे जल जानेपर

१—आगसे जली हुई जगहपर तत्काल अलसीका तेल और चूनेका निथरा पानी लगानेसे बहुत लाभ होता है।

२—इमलीकी छाल जलाकर गायके घीमें मिलाकर लगावे।

३—जले हुए अंगपर फौरन बूरा मल देनेसे छाला नहीं पड़ता।

४—यदि घाव हो गया हो, तो कड़वा (सरसोंका) तेल चुपड़कर ऊपरसे पत्थरका कोयला खूब बारीक पीसकर कपड़छानकर बुरक दे।

बेहोशीकी दवा

खानेका बुझा हुआ चूना और नौसादर दोनों चीजें बराबर-बराबर लेकर हथेलीपर रगड़ लो या मिलाकर शीशीमें भरकर रख लो। अगर

कोई आदमी किसी कारणसे वेहोश हो गया हो या शीतसे दाती भिच गई हो, तो यह दवाई सु घानेसे फौरन होशमे आ जायगा और दाती खुल जायगी। अगर दात या सिरमे जोरसे दर्द हो तो भी इसको सु घानेसे बहुत लाभ होगा। अगर कोई मनुष्य डरकर पागल हो गया हो या किसी स्त्रीको भूत-चुडैल लग गयी हो, तो इसे सु घाते ही फौरन बकार जायगी और व्याधा भाग जायगी।

विशूचिका या हैजा

हैजेके लक्षण—हैजेकी प्रथम अवस्थामे रोगीका जी मिचलता है। फिर बारम्बार वमन और पतले दस्त होते हैं। दूसरी अवस्थामें जीभमे काटे पड जाते हैं, प्यासका जोर बढता है, नाडीकी चाल मंद पड जाती है, कुछ-कुछ वेहोशी आने लगती है। तीसरी अवस्थामे एक दम होश-हवास नहीं रहता, सज्ञा नाश हो जाती है। हाथ-पैर ठडे पड जाते हैं, हिचकियां चलने लगती हैं तथा पेशाब बन्द हो जाता है। चावलके माडकी माफिक पतला और वैसा ही रगदार दस्त होता है हैजेका पक्का लक्षण है।

१—अफीम, जायफल, केसर, लौंग, कपूर इन पाच चीजोंको छ छ माशे लेकर खरलमे डालकर खूब घोंटो फिर दो-दो रत्तीकी गोलियां बना लो। जबतक दस्त और वमन बन्द न हो तबतक एक-एक घण्टेपर एक-एक गोली गर्म जलके साथ रोगीको निगलवाओ। कम उम्रवालेको आधी गोली दो।

२—अगर किसीको हैजा हो जाय और कोई दवा या हकीम, वैद्य न

मिले, तो प्याज कूटकर उसका रस निकाल लो और हैज़ेवालेको छ-छ माशे घण्टे घण्टेमें उस वक्ततक पिलाओ जबतक कि वह आराम न हो जाय।

३—अगर प्यासका जोर न घटे तो अर्क सौंफ आध पाव,अर्क गुलाब एक छटाक,अर्क पोदीना एक छटाक और पानीका बर्फ आध पाव इन चारोंका या इनमें से जो वक्तपर मिल सके। एक मिट्टीके बर्त्तनमें मिलाकर रख लो। जब रोगी पानी मांगे तब रुपया-रुपयाभर यही अर्क पिलाओ।

—अगर ऊपरकी दवाओंसे वमन या उल्टी होना बन्द न हो, तो चौकोर पतले कागजपर राई पीसकर लपेट दो और इस कागजको पेटपर चुपका दो, जब जलन होने लगे तब उसे उतार लो इस तरकीबसे वमन बन्द हो जाती है।

ट—[१]उपरोक्त दवायें स्त्री तथा पुरुषोंके लिये इस्तेमाल की जानी चाहिये।
[२] छोटे छोटे बच्चोंके रोगोंकी दवाएं आगे लिखी जायगी।
[३] गर्भवती स्त्रीको किसी रोगमें बगैर किसी डाक्टर या हकीमकी राय लिये किसी तरहकी दवा न देनी चाहिये।
[४] अनाड़ी वैद्यकी दवा हानिकारक होती है। दवा जांच कर चाहिये।
[५] पथ्य लेनेपर भोजनकर दिनको न सोवे।
[६] जिस दवाका कहीं वजन न दिया हो वह बराबर-बराबर समझे।
[७] चूरन बड़ोंको छ माशेसे एक तोलातक और बच्चोंको दो माशेसे तीन माशेतक देना चाहिये।

५—अगर हाथ-पावमे बायटे आते हो, शरीर शीतल हो गया हो और नाडीकी चाल मन्द पड गई हो, तो हाथोंको कलाई और पैरोंकी एडियोपर राईका पलस्तर रख दो ।

६—अगर दस्त या प्यास कम हो जाय या बिल्कुल बन्द हो जाय लेकिन रोगीका पेशाब न खुला हो, तो गफलत छोडकर फौरन पेशाब खोलनेका उपाय करना चाहिये ।

७—कलमीशोरा, ढाकके फूल, सेल खडी, गुलाबजल चारोंको पीसकर पेट और पेडूपर लेपकर देनेसे फौरन ही पेशाब उतरेगा ।

८—राईका पलस्तर कमरपर रक्खो या जरा-सा कपूर मूत्रेन्द्रियपर रक्खो, फौरन पेशाब होगा ।



बाल-रोग-चिकित्सा

खांसी

१—काकड़ासिंगी ६ माशे, अतीस ६ माशे छोटी पीपल ६ माशे,सबको कूट-छानकर बारीक चूरन बना लो। दो रत्ती चूर्ण थोड़ीसी शहदमें मिलाकर दिनमें तीन बार चटाये। यह ज्वर, खांसी और वमनमें लाभदायक है।

२—काकड़ासिंगी, अतीस, छोटी पीपर, छिली हुई मुलहटी और बबूलका गोंद पाचों दवाओंको समान भाग कूट कपड़छानकर चूरन बनावे और एक माशा चूर्ण दो माशे शहदमें मिलाकर प्रातःकाल दो बार चटावे। कफकी खांसीमें यह विशेष लाभकारी है।

३—छोटी पीपल दो तोले, अतीस ६ माशे, घोटकर चूर्ण बनावे दो-तीन रत्ती चूर्ण शहदमें मिलाकर चटावे। प्रात,दोपहर, सायं, दिनमें तीन बार चटानेसे सर्दी, जुकाम और खांसीमें लाभ होता है।

अजीर्णके दस्त

१—सुहागा भूनकर छोटी हर्रे, काला नीमक और भूनी हींग इन चारों चीजोंको घोलकर माके दूधमें देना।

यदि गर्मीके दस्त हों तो वंसलोचन, छोटी इलायची, मिश्री पीसकर माताके दूधमें पिला दो।

३—दस्तके साथ आव जाती हो, तो वायविडंग, अजमोद, और पीपर महीन पीसकर चावलके धोवनमें दे।

यदि दस्तोंमें खून जाता हो, तो पाषाणभेद और सोंठ पानीमें घिसकर पिलावे।

ज्वर

नागरमोथा, पीपल, अतीस और काकड़ासिंगी इन चारोंको कूट-पीसकर छान लो, इस चूर्णके शहदमें मिलाकर चटानेसे कोंके ज्वरातिसार, खांसी, वमन और श्वास यह सब रोग म होते हैं। असलमें यह "बाल-चतुर्भी" चूर्ण ज्वरातिसार करनेवाला है। अगर ज्वरातिसारके साथ खांसी, श्वास और क उपद्रव भी हों, तो वह भी इसीसे नाश हो जाते हैं।

-अगर खांसीहीका जोर ज्यादा हो, तो इसीमें जवासी मिला नी चाहिये और दस्तोंका जोर ज्यादा हो, तो नागरमोथा कालकर धनिया मिला देना चाहिये।

अफरा (पेट फूलना)

ींग पानीमें घोलकर नाभी ढूढी) के आस-पास लेप कर दो। धा नमक, सोंठ, इलायची, भुनी हींग और भारंगीके चूर्णको में मिलाकर चटा दे और उपरसे गर्म पानी पिलावे तो बालक- अफरा और पेटके वात शूल आदि आराम हो जाते हैं।

दूध डालना

१—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठको चूर्णकर शहद और घीमें मिलाकर चटानेसे बच्चेका दूध डालना बन्द हो जाता है।

२—ऊपर लिखी बाळचतुर्सी शहदमें मिलाकर चटानेसे भी फायदा होता है।

मूत्र रुक जानेपर

पीपर, काली मिर्च, छोटी इलायची, सेंधा नमक, इनका चूर्ण शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंका रुका हुआ मूत्र खुल जाता है।

नाभीकी सूजनपर

पीली मिट्टीके गोलेको पहिले आगमें तपाकर लाल कर ले, फिर दूधमें भिजाकर कपडेमें लपेटकर नाभीपर सेक करो।

नाभी पक जानेपर

बकरीकी मेंगनीकी राख पकी हुई नाभीपर लगानेसे आराम होता है।

मुंह पकनेपर (छाले मुंहमें पड़ जानेपर)

पीपलकी छाल और पत्तेको चूर्ण करके शहद मिलाकर बच्चोंके मुंहमें लेप कर दे, इससे पका हुआ मुंह तथा छाले सब दूर हो हैं।

बहुत रोनेपर

पीपर और त्रिफलाके चूर्णको घी और शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकका रोना बन्द हो जाता है।

तालु पक जानेपर

जवाखारको शहदमें मिलाकर तालूमें लगाने और मालिश करनेसे आराम होता है।

दंत रोग

शहदमें मिलाकर दांतोंकी जड़ोंमें लगानेसे दांत सुख-आते हैं। भूना हुआ चौकिया सुहागा शहदमें मिला-लगाना और तांबा जस्ताके तार एक साथ कपड़ेमें गलेमें बांध दे।

करना चाहिये।
शहदमें मिलाकर

होता है।
किया जाय
पीसकर
रोग न

दूध डालना

१—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक और सोंठको चूर्णकर शहद और घीमें मिलाकर चटानेसे बच्चेका दूध डालना बन्द हो जाता है।

२—ऊपर लिखी बालचतुर्सी शहदमें मिलाकर चटानेसे भी फायदा होता है।

मूत्र रुक जानेपर

पीपर, काली मिर्च, छोटी इलायची, सेंधा नमक, इनका चूर्ण शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंका रुका हुआ मूत्र खुल जाता है।

नाभीकी सूजनपर

पीली मिट्टीके गोलेको पहिले आगमें तपाकर लाल कर ले, फिर दूधमें भिजाकर कपड़ेमें लपेटकर नाभीपर सेक करो।

नाभी पक जानेपर

बकरीकी मेंगनीकी राख पकी हुई नाभीपर लगानेसे आराम होता है।

मुंह पकनेपर (छाले मुंहमें पड़ जानेपर)

पीपलकी छाल और पत्तेको चूर्ण करके शहद मिलाकर बच्चोंके मुंहमें लेप कर दे, इससे पका हुआ मुंह तथा छाले सब दूर हो जाते हैं।

बहुत रोनेपर

पीपर और त्रिफलाके चूर्णको घी और शहदमें मिलाकर चटानेसे ...लकका रोना बन्द हो जाता है।

तालु पक जानेपर

जवाखारको शहदमें मिलाकर तालुमें लगाने और मालिश करनेसे आराम होता है।

दंत रोग

चूनेको शहदमें मिलाकर दांतोंकी जड़ोंमें लगानेसे दांत सुख-... निकल आते हैं। भूना हुआ चौकिया सुहागा शहदमें मिला- ... मसूड़ोंपर लगाना और ताबा जस्ताके तार एक साथ कपड़ेमें ...धकर बच्चेके गलेमें बाध दे।

पसली रोगपर

—प्याजके अर्कमें अलुआ पीसकर पसलीपर लेप करना चाहिये।
—चावल भर असली कस्तूरी ६ माशे बढ़िया शहदमें मिलाकर ...चेको चटावे।
—पसलीके रोगमें दस्त करा देनेसे भी जल्दी आराम होता है।
—बालक पैदा होनेके समय जब उसका नाल छेदन किया जाय उसी समय चावलभर कस्तूरी थोड़ेसे कोयलेमें महीन पीसकर बालकके कटे हुए नालपर लगा दे तो फिर यह रोग न होगा।

पेशावमें चिनग

बबूलके गोंदको ४-५ डलो कपडेमें बांधकर पानीमें भिगो दे फि उस पानीमे मिश्री मिलाकर दिनमें चार-पांच बार पिलाये।

मकड़ी फरना

नीबूके रसमें चूना पीसकर लगाये या अमचूर पीसकर लगावे

आंख दुखना

१—कडुआ तेल बालकके सिरमें लगावे और कानमें डाले। रसौतक पानी आंखोंमें डाले। बकरीके दूधका फाया बांधे। रसौत औ फिटकिरी बराबर-बराबर और उससे आधी अफीम पानीमें पीस कर गुनगुना करके आंखोंके ऊपर नीचे पलकोंपर लेप करे।

कांच निकलना

बालकके ही मूत्रसे उसको शौच करावे या कडुवा तेल लगाकर ऊपरसे जला हुआ लसौडा पीसकर लगावे।

तृषा निवारक योग

नेत्रवाला और खाडको शहदमें मिलाकर चटानेसे बच्चेकी प्यास दूर हो जाती है।

चुन...

...रोगमें बाल...

पतले कीड़े निकलते हैं। गुदामें कड़ुआ तेल लगाकर ऊपरसे रोली लगा दे।

कड़ुआ तेल लगाकर चिलमकी जली हुई तमाखूका गुल लगा दे।

नोट—विशेषकर इस रोगमें बच्चे नाक भी खुजलाते हैं।

सूखारोगपर

छ माशेसे १ तोलेतक गदहीका दूध सुबह-शाम बच्चेको पिलाने- शरीर पुष्ट होता है। इस रोगकी दवा करनेसे पूर्व बच्चेको का जुलाब देना चाहिये। फिर सेंधा नमक, त्रिकुटा, लवा- न, दाठा, कदम्ब, बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस छानकर शहदमें कर बालकको आराम होनेतक नित्य सबेरे चटावे।

बच्चोंके लिये जुलाब

रेवत चीनी, हरड़, सौंफ, तुरञ्जीन, इनमेंसे कोई भी वस्तु जलमें पिसकर देनेसे बालकका कोठा साफ हो जाता है। डा-सा अण्डीका तेल भी पिलानेसे कोठा साफ होता है।



शारीरिक योग द्वारा इलाज

आंखकी गुहेरीपर

१—जब किसी छोटे-बड़े स्त्री-पुरुष तथा बच्चेकी आंखमें गुहेरी हो जाय तो सुबह-शाम हथेलीपर अंगुली घिसकर कुछ गर्मी होनेपर गुहेरीपर लगावे। इस तरह तीन बार सुबह-शाम दोनों वक्त दो-तीन दिन लगानेसे गुहेरी अच्छी हो जायगी।

प्यास लगनेपर

(२) यात्राके दरम्यान ऐसा अवसर आ जाय कि पानी बहुत दूर-तक नहीं मिल सके और प्यास जोरसे लग रही हो, ऐसे समयमें बिना पानीके प्यास बुझानेका प्राकृतिक उपाय यह है कि जीभको तालुमे कुछ देरतक लगा रखना चाहिये ऐसा करनेसे कुछ समयके लिये प्यास आसानीसे बुझ सकती है और पानी न मिलनेकी तकलीफसे बच सकते हैं और जी नहीं घबड़ायगा जैसा बहुधा पानी न मिलनेसे होता है।

चोट लगनेपर

(१) यदि हाथ-पावमें अकस्मात् चोट लग जावे, तो उस स्थानपर पेसाब करनेसे बहुत फायदा होता है। और पकता नहीं है, या

ऐसा उपाय न किया जा सके, तो चोट लगे हुए अगको पानीमे डुबोकर कपडा बाध देना चाहिये। यदि खून न निकला होवे तो मुहमे रखनेसे भी आराम होता है।

ज्वर तथा सिरदर्द इत्यादिपर

(४) जब किसीको कोई भी रोग (ज्वर, हफनी, दर्द इत्यादि) क्यो न हुआ हो, उस समय जो स्वास चलता है, उससे विपरीत स्वास चलाना चाहिये अर्थात् यदि दाहिना स्वास चलता हो तो बाया और यदि बाया चलता हो, तो दाहिना स्वास चलाना चाहिये। इसका उपाय यह है कि यदि दाहिना स्वास चलते समय ज्वर आता हो, तो दाहिनी नाकको बन्दकर दाहिनी करवट सो जानेसे बाया स्वास चलने लगेगा। इस प्रकार करनेसे ही दर्द इत्यादि रोग उसी समय कम हो जायगे और ज्वर इत्यादि जो १० दिन भुगतनेवाला हो वह २ दिनमें ही छूट जायगा, परन्तु इस समय मुखसे स्वास नहीं लेनी चाहिये।

दाद छाजन रोगपर

५—यदि किसीके दाद या छाजन हो गया हो, तो प्रातःकाल सोतेसे उठकर विना मुह धोये अपने मुहका लब लगानेसे भी आराम हो जाता है।



विषनाशक उपाय

सांप विष

१—जिस समय सर्प काटे तुरन्त मरीजको आध सेर, तीन पाव घी पिला दो, तो कै होकर विषका असर निकल जायगा।

२—एक छटांक पीनेमें तमाकू घोलकर पिलावे।

३—साठीकी जड़ ६ माशे काली मिर्च ११ दाने दोनोंको पानीमें खूब घोलकर पिला दे। यदि एक बारमें आराम न हो तो आध घंटे पीछे फिर पिला दे। चार-पांच बार पिलानेसे मुर्दा भी जी उठेगा।

बिच्छू-विष

१—चूना और खटाई दंश स्थानपर रखे दर्द मिट जायगा।

२—बिच्छू काटनेकी जगह ६ माशे नौसादर रखे और ऊपरसे मोटा कपड़ा लपेटकर ठंडे पानीकी धार पांच मिनटतक डालता रहे विष उतर जायगा।

३—जमालगोटा पानीमें घिसकर लगा दे। ४—शहद और घी बराबर-बराबर मिलाकर लगा दे।

बर्रेका इलाज

१—चार-पाँच दियासलाइयोंको पानीमें भिगोकर काटे हुए स्थानपर रगड़ दे।

२—नौसादर और चूना मिलाकर रगड़ दे।

३—[illegible] पानी मल दे।

कुत्ता काटनेका इलाज

१—लाल मिर्च पीसकर घावमें भर दे। २—कुचला पीस कर लगा दे और एक-एक रत्ती सात दिनतक सेवन करे। ३—पागल कुत्तेने काटा हो तो [illegible] पत्ते लेकर चारों बराबर-बराबर तीन टुकड़े करे। उसमें मिश्रीकी डली ([illegible]) एक-एक खुराक एक-एक घंटे पीछे खिलावें।

सींगियाका विष

१—नारंगीका रस पिलानेसे आराम आता है।

अफीमका विष

१—हींगको पानीमें घोलकर पिला दे। २—प्याजका रस पिलावे।
३—फिटकिरी सुहागा घीमें पीसकर पिलावे। ४—अफीमके नशे-वालेको सोने न देकर टहलाता रहे।

संखियाका विष

१—[illegible] पत्तोंका रस अथवा गूलरका दूध पिलावे।

२—कत्था घोलकर पिला दे। ३—कपूर मिलाकर घी दूध

धतूरेका विष

१—अनन्नासका रस पिलावे। २—बैंगनके फल, पत्ते या ज[illegible] पानीमें घोलकर पिला दे। ३—निंबौरी अथवा उसकी मिंग[illegible] पानीमें घोलकर पिला दे। ४—कपासके फल, फूल, पत्ते, [illegible] सबको पानीमें घोलकर पिला दे।

भंगका विष

ईमलीका पत्ता पिला दे या अरहरकी दाल क्वालकर [illegible] पानी पिला दे। दही पानीमें मिलाकर पीनेसे भी भंगका विष उ[illegible] जाता है।

मेढकका विष

थूहरके दूधमें सरसो पीसकर लेप करनेसे मेढकका विष [illegible] होता है।

मकड़ीके जहरपर

हल्दी, दारू हल्दी, मजीठ, पतंग और नागकेसर ठंडे पानी[illegible] पीसकर लेप करनेसे मकड़ीका जहर उतर जाता है।

यात्रा-रोगी-मित्र

वैसे तो हमने यात्रियोंको सुविधाके लिये पिछले पृष्ठोंमें कुछ असली रोगोंकी दवायें लिख दी हैं, जिनको व्यवहारमें लाकर स्वयं लाभ प्राप्त करके विशेष पैसा खर्च करनेसे भी बच जाय। जो मञ्जल परदेशमें कोई रोग उठ खड़ा होनेपर हमारी ऊपर लिखी हुई दवाइयोंको तत्काल बनानेमें आलस्य समझें या असमर्थ हों, तो उनको निम्न-लिखित बनी हुई दवाइयोंको हमेशा अपने साथ रखनी चाहिये इनसे भी विशेष सुविधा रहेगी।

(१) पं० ठाकुरदत्त शर्मा वैद्य लाहौरकी बनी हुई "अमृतधारा" समस्त रोगोंकी दवा।

(२) डा० एस० के० वर्मन कलकत्ताका बना हुआ "अर्क कपूर" हैजाकी दवा।

(३) के० टी० डोंगरे गिरगाव बम्बईका "बालामृत" बच्चोंके रोगोंकी दवा।

(४) अमृताञ्जन डिपो गिरगाव बम्बईका "अमृताञ्जन" सिर दर्दकी दवा।

(५) कार्णिक गिरगाव बम्बईका "कार्णिक एक्युपिक्‌चर बुखारकी दवा।

(६) बाबू हरीदास वैद्य कलकत्ताका "अकबरी चूर्ण" तथा लवण-भास्कर चूर्ण।

(७) पं० क्षेत्रपाल शर्मा मथुराका बना हुआ "सुधासिन्धु" सब रोगोंकी दवा।

अपनी बीती और प्रत्यक्ष देखी

(१) एक समय हम गंगाजी स्नान करनेके लिये सोरो (एटा) गये थे। सोरो स्टेशनसे बैलगाडीमें सवार होकर गंगाघाटको जा रहे थ और अन्य बहुतसे यात्री बैलगाडी, इक्का, मोटरद्वारा गंगाघाट जा रहे थे। रास्तेमें एक मोटर जिसमें ऊपर नीचे बेशुमार सवारी लदी हुई थी सडककी दूसरी पटरीपर पेडकी छायामें भों-भों करती चली जा रही थी कि एक लटे पेड़को लटकी हुई शाखासे लपेटा खाकर मोटरकी छतपर बैठे हुये यात्रियोंमेंसे एक नौजवान लड़का झटसे मोटरकी छतपरसे नीचे गिर गया और सिर फटनेके कारण उसके प्राण उसी वक्त निकल गये। तब उसकी माता जो उसके साथ थी चीख मार-मारकर रोती हुई गंगाजीको धाय देने लगी कि मैं भली गंगा नहाने आई जो अपने एक लडकेको भी गंगाकी भेट दे चली। इस आखों देखी दुर्घटनासे हमारा हृदय एक दम दु खसे विह्वल हो उठा मोटरसे इसी प्रकार अनेकों दुर्घटनायें देखने और सुननेमें आती हैं इस लिये यात्रियोंको मोटरकी छतपर भूलकर भी न बैठना चाहिये।

(२) अभी थोड़े दिनकी बात है कि एक व्यापारी सज्जन डढ़ हजार रुपयेके नोट लेकर किसी दिशावरको जा रहे थे। रास्तेमें गंगा-

स्नान करनेके लिये कानपुर उतर पडे, वहापर गंगाके किनारे बैठनेवाले घटवालियोके पास उन्होंने अपने कपडे वगैर उतारकर रख दिये और आप गगामें स्नान करनेके लिये आगे बढ़ गये। मगर अपने कपड़ोंकी तरफ निगाह करते ही रहे। गोता लगाती समय आपकी निगाह कपडोंकी तरफ देखनेसे चूक गई कि इतनेमें ही आपके नोट जिस कपडेकी जेबमे रखे थे वह कपडा गायब हो गया, जब आप स्नान करके आये, तो देखनेपर अपने नोट नदारद पाये। यद्यपि आपने ,घाटवालेसे कह दिया था कि हमारे कपडोंकी निगाह रखना तथापि घाटवाले यह कहकर "अपनी रकम रुपया पैसा अपने पास रखना" बरी हो जाते हैं, चाहे फिर वही हडप कर जाय, मगर फिर उनसे कौन कहनेवाला है कि तुमने रकम चुराई ? अब बेचारे लालाजीके होश फाक्ता हो गये और बडे परेशान हुए। इसलिये गगास्नान करते समय यात्रियोंको किसीका विश्वास न करके अपनी रकम जोखिमकी स्वय हिफाजत रखनी चाहिये।

३—एक समय मैं देवली छावनीसे नसीराबाद मोटरद्वारा आ रहा था। रास्तेमें जब कि मुकाम १२ मील रह गया था एकायक मोटरका पहिया खराब हो गया। जब ड्राइवरको दुरुस्त करनेको कहा गया, तो मालूम हुआ कि उसके पास दूसरा पहिया तय्यार नहीं था और न उसके पास ट्यूब टायर ही था। रातके १० बज गये थे, अधेरी रात थी और जगलका रास्ता था। वहापर पानी भी नहीं मिल सकता था। बडी आफतमें फँस गये। अब

क्या करना चाहिये? फिर ड्राइवरसे कहे कि हमको तुम्हे मुकामपर पहुंचाना चाहिये। यह तुम्हारा काम है, तुमने हमसे किराया लेकर इस बातका कण्ट्राक्ट (ठेका) किया है फिर मोटरके टायरमें नीमकी पत्ती तथा घास भरवाकर जैसे-तैसे मुकामपर पहुंचे। वहांपर पहुचते ही हमने पुलिसमें ड्राइवरकी रिपोर्ट कर दी कि उसके पास सफरका काफी सामान नहीं था, जिसके कारण हमको रास्तेमें बहुत तकलीफ हुई। पुलिसने ड्राइवरका चालान किया और उसके ऊपर जुर्माना हुआ। इसलिये मोटरमें सवार होनेसे पहिले यह देख लेना चाहिये कि उसके पास सफर तै करनेके लिये ट्यूब, टायर तथा पेट्रोल आदि काफी सामान है या नहीं।

४—एक बार मैं अजमेरसे खंडवा आ रहा था रास्तेमें जंकशन स्टेशन पड़ता है, जहांपर गाडी आधा घंटेसे अधिक खडी रहती है। गाडी स्टेशनपर आनेपर मैंने भोजन इत्यादि किया और एक रेलवे पोर्टरसे पूछा कि गाडी अभी कितनी देर खडी रहेगी। उसने जवाब दिया—अभी आधा घटा और खडी होगी। इतनेमे मेरे साथ जो आदमी था, उसने कहा कि मुसाफिरखानेमे जाकर कुछ फल लाओ, मैं मुसाफिरखानेमे चला गया। वहांपर गाडीका क्रौस होता है। इसलिये हमारी गाडी प्लेटफार्म छोडकर खडी हुई थी, जो मुसाफिरखानेसे नहीं दिखाई पडती थी और दूर थी, ज्योंही मैं मुसाफिरखानेमें पहुंचा, गाडी छूट गई, मुझसे टिकट कलक्टरने कहा तुम कहा जाओगे? तुम्हारी गाडी तो छूट गयी। उस समय मैं बहुत दुःखित हुआ। मेरे शरीरपर १ फतूरी (कवजा कोपरी)

तथा मलमलका बारीक कुर्ता और एक अंगोछा था। जेबमें पांच मात्र आने पैसे थे और सब सामान तथा टिकट वगैरह सब कोटकी जेबमें था, जो गाड़ीमें रह गया था। थोड़ी देरतक मैं कर्तव्यविमूढ़की भांति सोचमें पड़ गया, फिर मैंने सोचा और स्टेशनमास्टरके पास जाकर सब हाल कहा तो उसने फौरन मुझसे डिब्बेका नम्बर तथा मेरे साथीका नाम पूछकर अगले स्टेशनको टेलीफोन द्वारा कहा। मेरा साथी गाड़ीमें था और सामान सब जंजीरसे गाड़ीकी पटरीसे सम्मेल बांधकर ताला लगा रखा था। उसकी चाबी मेरे पास ही थी। इस कारण मेरा साथी सामान उतार नहीं सकता था, तो मैंने सिर्फ अपनी टिकट अगले स्टेशनमास्टरको देनेको कहा, सो उसने दे दी। फिर मैं रातकी दूसरी गाड़ीसे गया और अगले स्टेशनमास्टरसे टिकट लेकर खण्डवा पहुंचा। उस समय मुझे मेरी नादानीपर बहुत खेद हुआ और बिना कपड़े-सामानके बहुत तकलीफ उठानी पड़ी। उसी समय मैंने यह निश्चय किया कि गाड़ी ठहरनेका टाइम (समय) पूछना हो तो गार्ड या स्टेशनमास्टरहीसे पूछना चाहिये। दूसरे किसी आदमीसे नहीं पूछना चाहिये, क्योंकि दूसरे लोग अन्दाजिया बोल देते हैं, जिससे यह तकलीफ उठानी पड़ी। दूसरा निश्चय किया कि रुपया-पैसा और टिकट हमेशा पहने हुए उस कपड़ेकी जेबमें रखना चाहिये, जो हमेशा अपने शरीरपर रहता होवे, जैसे फतूही, बनयान, वास्कट (जाकेट) कमीज या कुर्ता वगैरह। क्योंकि पासमें पैसा रहनेसे तकलीफ कम मालूम

होती है, दूसरे अगर मेरा साथी सगमे न हुआ होता और किसी भापनेवालेने कोटकी जेबमेंसे रुपया पैसा निकाल लिया होता, तो यह दुहरी चोट बैठती और उसी समय मेरे मनमें यह भी विचार उत्पन्न हुआ था कि अपने विचार पुस्तकके रूपमें रखू, जिससे सर्व साधारणको लाभ हो सके, क्योंकि ऐसे मौके यात्रियोंको अक्सर आते रहते हैं और कर्तव्यविमूढ़ होकर चुप बैठ जाते हैं और तकलीफ उठाते है। इसलिये ऐसे समय घबडाना नहीं चाहिये और धैर्यके साथ बुद्धिसे काम लेना चाहिये।

(५) एक समय मैं दौंड (पूना) से खेडवा जा रहा था। शामको ७ बजे गाड़ी रवाना होती है। मेरे साथमे एक मित्र थे। दोनों जने बात-चीत करते जा रहे थे। रातको करीब ११ बजेका समय हुआ और यकायक आंख लग गयी। दूसरे स्टेशनपर आंख खुलते ही सामानकी तरफ ध्यान किया जैसाकि नियमानुसार करना चाहिये, तो अपने जूते नदारत पाये। मैंने गौरसे डिब्बेमें देखा कि इसमेसे कौन सवारी उतरी है। सिर्फ एक सवारी उतरी मालूम हुई, जो मनमाड आनेवाली थी, मगर वह बीचहीमें क्यो उतर गई। मैंने अपने निश्चित नियमानुसार पता लगा लिया था कि इसमें कौन-कौन मुसाफिर कहा-कहा जानेवाले हैं,तो मैंने सोचा कि वही मुसाफिर मेरा जूता ले गया होगा और दूसरे किसी डिब्बेमें बैठ गया होगा। आगे दो-तीन स्टेशन छोडकर पुनत्रा स्टेशन आयगा, जहा गाडी ज्यादा देर खडी होती है। वहा उस आदमीका पता लगायेंगे ऐसा सोचकर चुप

बैठ गये। पुतम्बा स्टेशन आनेपर मैंने अपने मित्रको गाडी तलाश करनेके लिये एक तरफ भेजा और मैं दूसरी तरफ गया, तो मेरे मित्रने तलाश करते करते उसी आदमीको इंजिनके पासके डिब्बेमें बैठा पाया जिसने जूते पावमें पहन लिये थे और वह जूते उसके पावमें ठीक बैठ थे। मेरे मित्रने गार्डसे कहकर उस आदमीको उतरवा लिया और पूछा कि जूते क्यों चुराये। इतनेमें मैं भी पहुच गया और मैंने अपने जूतोंकी शिनाख्त की, तो गार्ड और स्टेशन-मास्टरने मुझे मेरे जूते वापिस दिलवा दिये।

(६) एक समय मैं हाथरससे बाल-बच्चे समेत रंडया पारसल ट्रेनसे आ रहा था, भूपाल स्टेशनपर पहुचते ही गाडीकी बत्ती बराबर नहीं जलने लगी। मैंने ट्रेन इक्जामिनरको बत्ती ठीक करवानेको कहा, तो उसने सुनी अनसुनी कर दी, फिर मैं असिस्टेंट स्टेशन मास्टरके पास गया, जो ड्यूटीपर था और उसकी शिकायत की। वह फौरन उठकर आया और ट्रेन इक्जामिनर (गाडी दुरुस्त करनेवाली) को बत्ती ठीक करनेकी ताकीद की, तब उसने बत्ती सुधारना शुरू किया, लेकिन अबतक गाडी चलनेको तैयार हुई बत्ती ठीक नहीं की गयी। हालाकि गाडी उस जगह एक घंटेसे ज्यादा खडी हुई थी, आखिर गाडी चल दी। जब गाडी चलने लगी तभी मैंने जजीर (एलार्म चेन) खींच दी। गाडी खडी हो गई और गार्ड स्टेशन मास्टर वगैरह मेरे डिब्बेके पास आये और मुझसे जजीर खींचनेका मतब पूछा। मैंने फौरन बयान कर दिया कि इस डिब्बेमे बत्ती नहीं जली है अंधेरेमें

ऐसी अनेकों घटनाएँ मेरी यात्रा-जीवनमें हुई है, किन्तु उन सब सबपर लिखनेमें पुस्तक बढ़ जानेका भय है और लिखनेका विषय भी नहीं है। ऊपर लिखी हुई बातोंका तात्पर्य यह है कि यात्रामें अनेक प्रकारकी आफतें आया करती हैं, किन्तु उन सबसे बचनेके लिये थोड़ी सावधानी और बुद्धिसे काम लेनेकी जरूरत है।



सतोपदेश

(१) सृष्टिकर्ताको सदैव निकट देखो, उसकी सहायक शक्तिपर विश्वास रखो।

(२) धर्मका आडम्बर न रखो।

(३) खुशामदसे दूर रहो, स्पष्ट सत्य बोलो व सत्य-संकल्प करो।

(४) धैर्यवान व जितेन्द्रिय बनो और अपने देश व जातिके अर्थ उचित त्याग करो।

(५) जातिगत ऊंच-नीचका भाव दिलमें न लाओ, अर्थात प्राणीमात्रसे प्रेम करो।

(६) निर्व्यसनी, निरोग पुरुष सिंह बनकर अपना व अपने आत्मीयोंका संरक्षण आप ही करने योग्य बनो।

(७) धन होनेपर अपने दुःखी भाइयोंको कभी मत भूलो।

(८) अपने शौकके लिये किसी जीवको क्लेश न दो।

(९) परमात्माके द्वारपर किसीको न रोको।

(१०) स्वयं धर्मान्धतामें फंसकर दूसरोंके सच्चे धार्मिक भावोंको न कुचलो।

(११) परावलम्बी जीवन सबसे निकृष्ट जानो।

(१२) सर्वदा आत्मसंशोधन करते रहो।

(१३) तुम्हारी सद्भावना द्वारा तुम्हारे शरीरका ही नहीं, वरन् सारे संसारका परिवर्तन हो सकता है।

(१४) धूर्त मनुष्योंकी धूर्ततायें दूसरोंकी अपेक्षा उनके ही मस्तिष्कको हानि पहुंचाती हैं ।

(१५) सदैव सुखी जीवन व्यतीत करो। या तो स्वय संसारके लिये उपयोगी बन जाओ या ससारको अपने लिये उपयोगी बना लो।

(१६)धनी बननेकी लालसा पाप-पुण्य नहीं देखती ।

(१७) अपनी आवश्यकताओंके लिये दूसरोंके अधीन होना पाप है।

(१८) दु खमे मृत्युकी कल्पना बडी मीठी लगती है ।

(१९) कष्ट पडनेपर मनुष्य अधिक विवेकी बन जाता है।

२०) बल निर्बलोंके रक्षणके लिये है, भक्षणके लिये नहीं ?

२१) बुद्धिमान होनेके लिये इससे सरल उपाय और क्या हो सकता है। कि जो तुम औरोंको बतलाते हो, उसे स्वय करो।

(२२) अपने कर्तव्यको स्वाधीनतापूर्वक करना और उसके फलको ईश्वरपर छोड देना ही दु खोंकी उत्तम औषधि है।

(२३) पापी पापोंसे नहीं, वरन् पापोंकी पोल खुलनेसे डरता है।

(२४)विलास धनीके लिये रोग और निर्धनके लिये मृत्यु है।

(२५) बिल्लीको अपने साथ सुलाकर उसके पंजोंकी शिकायत करना उचित नहीं।

(२६) मूर्खका हृदय मु हमें और बुद्धिमानका मु ह हृदयमें होता है।

(२७) कल्पनाकी प्रौढताका ही दूसरा नाम कविता है।

(२८) गम्भीर चिंताका दूसरा नाम तन्मयता है।

(२९) मातृ-मंदिरके पुजारीके लिये माकी सूनी गोद ही स्वर्ग है।

(३०) स्वतन्त्रता अपने अधिकारोंकी एक प्रतिज्ञा है।

ओ३म् शांति शांति शांति



सूचना

पुस्तक छपते-छपते यह मालूम हुआ है कि १० दिसम्बर सन् २९ ई० से सरकारने यह घोषित किया है कि नारी (कुलीको छोड़कर) रेलवेमें तीसरे दर्जेके मुसाफिर यात्रा करते समय अपने साथ १५ सेरके बजाय २५ सेर और ड्योढ़े दर्जेके २० सेरके बजाय ३० सेर तथा दूसरे दर्जेके ३० सेरके बजाय ४० सेर बोझा रख सकेंगे ।

पुस्तक मिलनेका पता

गोपालप्रसाद गोविंदप्रसाद अग्रवाल

दौंड जिला पूना


समाप्तम्